Website : www.kalamlok.com

वर्ष - 09 अंक - 330

कलम लोक

बक्सर, मंगलवार 14 अप्रैल 2026

पृष्ठ - 8
मूल्य 2 रू.

< 7

"संसार में हर वस्तु में अच्छे और बुरे दो पहलू हैं, जो अच्छा पहलू देखते हैं वे अच्छाई और जिन्हें केवल बुरा पहलू देखना आता है वह बुराई संग्रह करते हैं।

नाकेबंदी की तरफ आए तो कर देंगे तबाह, ड्रग्स तस्करों जैसा अंजाम भुगतने की डोनाल्ड ट्रंप ने दी चेतावनी

वॉशिंगटन (एजेंसी)।

अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने सोमवार को फिर से ईरान को चेतावनी दी। ट्रंप ने कहा है कि होर्मुज में अगर कोई भी ईरानी अमेरिकी नेवी नाकेबंदी की तरफ आया तो उसे तबाह कर दिया जाएगा। बता दें कि ईरान के साथ पाकिस्तान में वार्ता विफल होने के बाद से ही ट्रंप भड़के हुए हैं। वह लगातार ईरान को चेतावनी दे रहे हैं।

ट्रुथ सोशल पर पोस्ट में ट्रंप ने लिखा कि ईरान की नेवी को पूरी तरह से नेस्तनाबूद कर दिया जाएगा। ट्रंप ने लिखा कि ईरानी नेवी समुद्र की तली में पड़ी है। उनके पास 158 जहाज वहां पर हैं। हम इन्हें मार नहीं पाए हैं। यह लोग इसे फास्ट अटैक शिप्स कहते हैं, लेकिन हम लोग इसे बड़ा खतरा नहीं मानते।

गौरतलब है कि अमेरिका ने घोषणा की थी कि वह सोमवार को पूर्वी समयानुसार सुबह 10 बजे या ईरान के स्थानीय समयानुसार शाम साढ़े पांच बजे से ईरानी बंदरगाहों की नाकाबंदी शुरू करेगा। इसमें कहा गया कि 'यूएस सेंट्रल कमांड' (सेंटकॉम) ने कहाकि यह नाकेबंदी सभी देशों के उन पोतों के खिलाफ निष्पक्ष रूप से लागू की जाएगी' जो ईरान के बंदरगाहों और तटीय क्षेत्रों में प्रवेश कर रहे हैं या वहां से बाहर जा रहे हैं। सेंटकॉम ने कहाकि गैर-ईरानी बंदरगाहों के बीच यात्रा करने वाले जहाजों को होर्मुज जलडमरूमध्य से गुजरने की अनुमति दी जाएगी।

ईरान की 'फास्ट अटैक शिप्स' छोटी, लेकिन बहुत तेज स्पीड वाली हथियारबंद नौकाएं हैं। इनका इस्तेमाल आपातकाल के दौरान होर्मुज से गुजरने वाले बड़े जहाजों को निशाना बनाने के लिए किया जाता है।

इन शिप्स को रिवोल्यूशनरी गार्ड कोर नेवी ऑपरेट करती हैं। द वॉल स्ट्रीट जर्नल की एक रिपोर्ट में कहा गया है कि हॉर्मुज की निगरानी करने वाली आईआरजीसी की फास्ट अटैक क्राफ्ट का 60 फीसदी से अधिक हिस्सा, हफ्तों तक अमेरिकी-इजरायल हमला न होने के बावजूद वहां पर मौजूद है। हालांकि अमेरिका और इजरायल के हमलों ने ईरान की पारंपरिक नौसेना को काफी नुकसान पहुंचाया है। इससे 150 से अधिक जहाज डूब गए हैं। बता दें कि आईआरजीसी नियंत्रित छोटे जहाजों का बेड़ा संचालन और मुख्य शिपिंग मार्ग की गश्त करता है। विश्लेषक कहते हैं कि इन जहाजों का पता लगाना कठिन है और इन्हें ईरान की तटरेखा के साथ छुपाया जा सकता है। इससे इन्हें निशाना बनाना मुश्किल हो जाता है।

ईरान ने क्या कहा?

ईरान का कहना है कि अगर तुम लड़ोगे, तो हम लड़ेंगे। ईरान के शीर्ष अधिकारियों ने जवाबी कार्रवाई की धमकी दी। सैन्य सलाहकार और रिवोल्यूशनरी गार्ड के पूर्व कमांडर मोहसेन रेजाई ने लिखा कि होर्मुज़ नाकाबंदी का मुकाबला करने के लिए देश की सशस्त्र सेनाओं के पास कई महत्व हथियार हैं, जिनका अभी तक इस्तेमाल ही नहीं हुआ। ईरान की संसद के अध्यक्ष मोहम्मद बगेर कलिबफ, जिन्होंने वार्ता में ईरान का नेतृत्व किया, ने ईरान लौटने पर ट्रंप को संबोधित करते हुए कहाकि अगर तुम लड़ोगे, तो हम लड़ेंगे। ईरान के रिवोल्यूशनरी गार्ड ने कहा है कि होर्मुज पर उसका कब्जा है।

मॉनसून 2026 पर डराने वाली भविष्यवाणी

इस बार देश में सामान्य से भी कम होगी बारिश

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारत मौसम विज्ञान विभाग ने कहा है कि इस साल सामान्य से भी कम मॉनसूनी बारिश होगी। वर्ष 2026 के दक्षिण-पश्चिम मॉनसून को लेकर लंबी अवधि का पूर्वानुमान जारी करते हुए मौसम विभाग ने कहा कि इस साल देश में मॉनसूनी बारिश सामान्य से कम रहने की आशंका है, जिससे खेतीबाड़ी, पशुपालन और जल संसाधनों पर बुरा असर पड़ सकता है। सबसे ज्यादा असर मध्य भारत में होगा।

मौसम विभाग के मुताबिक, जून से सितंबर के बीच होने वाली कुल मॉनसूनी बारिश सामान्य से कम यानी 92% (±5%) रह सकती है। यह लंबी अवधि यानी 1971 से 2020 तक के औसत 87 सेंटीमीटर के अनुमान पर आधारित है। इसका मतलब है कि बारिश सामान्य से थोड़ी कम हो सकती है। पूर्वानुमानों में कहा गया है कि इस साल अल नीनो का प्रभाव रह सकता है, जिसकी वजह से न केवल प्रचंड गर्मी पड़ेगी बल्कि बारिश भी कम होगी।

विभाग ने कहा है कि अप्रैल से जून 2026 के दौरान अल नीनो-दक्षिणी दोलन की तटस्थ स्थितियाँ रहने की सबसे अधिक संभावना है। इसके बाद, दक्षिण-पश्चिम मॉनसून के मौसम के दौरान अल नीनो की मजबूत स्थिति बनने की बहुत अधिक संभावना है। इस वजह से मॉनसून कमजोर रह सकता है और सामान्य से कम बारिश हो सकती है। IMD के मुताबिक, अप्रैल से जून तक स्थिति सामान्य रहेगी।

अलकायदा के 3 आतंकियों को उम्रकैद की सजा

15 अगस्त पर लखनऊ को दहलाने की थी साजिश

लखनऊ (एजेंसी)।

देश के खिलाफ युद्ध छेड़ने और उत्तर प्रदेश में ब्लास्ट करने के लिए हथियार और विस्फोटक एकत्र करने का षड्यंत्र रचने के आरोपी अलकायदा के सहयोगी संगठन अंसार गजवातुल हिन्द (एजीएच) के आतंकी मुशीरुद्दीन, मिनहाज और तौहीद को दोषी करार देते हुए एनआईए कोर्ट के विशेष न्यायाधीश जैनेन्द्र कुमार पांडेय ने आजीवन कारावास और जुर्माने की सजा सुनाई है। कोर्ट ने दोषी मिनहाज और मुशीरुद्दीन को सजा के अलावा 1.42 लाख रुपये तथा दौहीद को 85 हजार के जुर्माने से दंडित किया है। इस मामले में एनआईए ने 42 गवाहों, 149 दस्तावेज तथा 109 वस्तुओं को भी कोर्ट में पेश किया। कोर्ट ने पत्रावली पर उपलब्ध साक्ष्य तथा गवाहों के बयान के आधार पर तीनों को दोषी करार दिया। कोर्ट ने आदेश दिया है कि सभी सजाएं साथ चलेंगी तथा जेल में बिताई गई अवधि इस सजा में समायोजित की जाएगी।

पुलिस ने तीनों को जिला कारागार से कड़ी सुरक्षा के बीच पेश किया था। सजा के बाद हिरासत में लेकर जेल भेज दिया। मुसीरुद्दीन लखनऊ के सीतापुर रोड स्थित फातिमा नगर मोहिबुल्लापुर, मिनहाज अदनानपल्ली रिंग रोड दुबग्गा तथा तौहीद अहमद उर्फ सोबू शाह जम्मू कश्मीर के अकबर कॉलोनी, अरिबाग, मॉनछोआ थाना छदूरा का निवासी है।

छह मुस्लिम देशों पर इतना क्यों मेहरबान हुए डोनाल्ड ट्रंप, उनके जहाजों पर लागू नहीं होगी नाकेबंदी

दुबई (एजेंसी)। भारतीय समयानुसार सोमवार शाम साढ़े सात बजे होर्मुज समुद्री मार्ग पर अमेरिका की सैन्य नाकाबंदी शुरू होते ही अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प ने सख्त रुख अपनाते हुए सोमवार को चेतावनी दी है कि अगर कोई भी जहाज अमेरिकी घेराबंदी के करीब आने की कोशिश करेगा, तो उसे तुरंत क्रूरता के साथ नष्ट कर दिया जाएगा। सोशल मीडिया पर जारी एक बयान में राष्ट्रपति ने कहा कि नाकाबंदी का उल्लंघन करने वाले जहाजों के खिलाफ उसी मारक प्रणाली का उपयोग किया जाएगा, जो समुद्र में ड्रग तस्करों के खिलाफ इस्तेमाल की जाती है। उन्होंने दावा किया कि उनकी कड़ी नीतियों के कारण समुद्र के रास्ते अमेरिका में आने वाली 98.2 प्रतिशत नशीली दवाओं की सप्लाई पहले ही रुक चुकी है।

ईरानी नौसेना की वर्तमान स्थिति पर टिप्पणी करते हुए राष्ट्रपति ट्रम्प ने दावा किया कि ईरान की मुख्य नौसेना अब पूरी तरह से खत्म हो चुकी है। उन्होंने कहा, 'ईरान की नौसेना समुद्र की गहराई में सो रही है, उसके 158 जहाज पूरी तरह से तबाह कर दिए गए हैं।' उन्होंने आगे बताया कि केवल कुछ छोटे 'फास्ट अटैक जहाजों' को ही छोड़ा गया है क्योंकि उन्हें

लड़ाई होर्मुज के वर्चस्व पर आ टिकी

लिहाजा, अब ईरान-अमेरिका की लड़ाई होर्मुज के वर्चस्व पर आ टिकी है। अमेरिका ने कहा है कि होर्मुज स्ट्रेट में ईरान द्वारा बिछा गए समुद्री माइन्स को हटाएगा और उस पर अपना कब्जा जमाएगा। इस बीच इज़रायल ने भी अपनी सैन्य तैयारी तेज कर दी है। रिपोर्ट्स के मुताबिक, बेन गुरियन एयरपोर्ट पर अमेरिकी KC-135 रिफ्यूलिंग विमान तैनात किए गए हैं। अमेरिकी सैन्य बेड़े स्स अब्राहम लिंकन को ईरान की तरफ बढ़ते देखा गया है। हालांकि, ईरानी सैन्य बलों ने दावा किया है कि उसकी चेतावनी के बाद अमेरिकी जंगी बेड़ा पीछे हट गया है।

छह मुस्लिम देशों पर दरियादिली क्यों?

इस बीच, अमेरिका ने छह मुस्लिम देशों पर दरियादिली दिखाई है और कहा है कि नाकाबंदी के दौरान इन देशों के जहाजों की आवाजाही पर कोई प्रतिबंध नहीं होगा और वे बेरोक-टोक होर्मुज समुद्री मार्ग से आ-जा सकेंगे। जिन देशों को ये छूट दी गई है, उनमें सऊदी अरब, संयुक्त अरब अमीरात (UAE), इराक, कुवैत, करत और बहरीन हैं। दरअसल, खाड़ी देशों के ये देश अमेरिका के मित्र देश हैं और इनके यहाँ अमेरिकी सैन्य ठिकाने हैं। 40 दिनों के ईरान-अमेरिका युद्ध के दौरान ईरानी सेना ने इन देशों को कई बार निशाना बनाया है।

अमेरिकी सेना के लिए बड़ा खतरा नहीं माना गया था। पहले से ही होर्मुज स्ट्रेट पर ईरान की घेरेबंदी से पूरी दुनिया की तेल और गैस सप्लाई बाधित हुई है और अब ट्रंप के इस कदम से इस इलाके में जहाजों की आवाजाही एकदम थम जा सकती है। बता दें कि ईरान जंग शुरू होने से पहले इस समुद्री मार्ग से रोजाना 130 से 150 जहाज गुजरते थे जो अब 45 दिनों के युद्ध और उसके बाद की समयावधि में मात्र 245 जहाज गुजरे हैं। बीबीसी एक रिपोर्ट में कहा गया है कि अभी भी होर्मुज स्ट्रेट में करीब 800 जहाज फंसे हुए हैं।

पीएम मोदी और ममता बनर्जी एक ही सिक्के के दो पहलू : ओवैसी

कोलकाता (एजेंसी)।

AIMIM प्रमुख असदुद्दीन ओवैसी ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और तृणमूल कांग्रेस सुप्रीमो ममता बनर्जी को एक ही सिक्के के दो पहलू बताया। मुर्शिदाबाद जिले की रघुनाथगंज विधानसभा क्षेत्र में चुनावी सभा को संबोधित करते हुए उन्होंने यह आरोप लगाया।

ओवैसी ने कहा, 'जब एक वीडियो सामने आया तो मैंने घोषणा की कि मजलिस बंगाल के मुसलमानों के हितों से समझौता बर्दाश्त नहीं करेगी। बताइए कि क्या ममता बनर्जी ने भाजपा का साथ नहीं दिया? पीएम मोदी और ममता एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। पीएम मोदी और ममता भाई-बहन जैसे हैं। ममता ने दावा किया था कि वे बंगाल में वक्फ एक्ट लागू नहीं करेंगी, लेकिन उन्होंने सिर्फ आपके वोट हासिल करने के लिए झूठ बोला।'

यह आरोप तब आया जब टीएमसी ने एक्स पर एक स्टिंग वीडियो पोस्ट किया, जिसमें AJUP प्रमुख हुमायूं कबीर 1000 करोड़ रुपये के सौदे की बात करते दिख रहे हैं।

आरक्षण का तहे दिल से समर्थन, पर तरीका ठीक नहीं

नई दिल्ली (एजेंसी)। देश भर के महिला समूहों, सामाजिक कार्यकर्ताओं और नागरिक संस्थाओं के करीब पांच सौ सदस्यों ने महिला आरक्षण और परिसीमन से जुड़े प्रस्तावित विधेयकों पर आगे बढ़ने के सरकार के तौर-तरीके को लेकर गहरी चिंता जताई है। ये विधेयक इस सप्ताह संसद में पेश किए जाने हैं। सिविल सोसायटी के सदस्यों ने हालांकि विधानमंडलों में महिलाओं के लिए आरक्षण के सिद्धांत का एक बार फिर समर्थन किया है लेकिन महिला आरक्षण और परिसीमन पर प्रस्तावित कानूनों में संशोधन के तरीके और उसमें पारदर्शिता की कमी पर चिंता जताई है। 95 शहरों और जिलों से सिविल सोसाइटी के 488 लोगों के समूह ने सोमवार को एक खुली चिट्ठी में केंद्र सरकार से आग्रह किया कि वे व्यापक सलाह-मशविरे के लिए बिलों के ड्राफ़्ट को सार्वजनिक करें। समूह ने कहा है कि वे विधायिकाओं में महिलाओं के लिए आरक्षण का 'तहे दिल से' समर्थन करते हैं। इस याचिका के प्रमुख हस्ताक्षरकर्ताओं में अमु जोसेफ, अंजना प्रकाश, कल्पना कनबीरन, रोमिला थापर, नंदिनी सुंदर, उर्वशी बुटालिया और योगेंद्र यादव जैसे नाम शामिल हैं। एक बयान में, हस्ताक्षरकर्ताओं ने उस तरीके पर चिंता जताई, जिस तरह से 16 से 18 अप्रैल तक बजट सत्र के विशेष विस्तार के दौरान कानून पेश करने का प्रस्ताव है। बयान में कहा गया है कि प्रस्तावित कानूनों - जिनमें कथित तौर पर महिला आरक्षण और परिसीमन अभ्यास से जुड़े संशोधन शामिल हैं - का भारत के चुनावी ढांचे और लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं पर दूरगामी प्रभाव पड़ने की उम्मीद है। महिला संगठनों और व्यक्तियों के एक समूह ने सांसदों को भी संबोधित कर खुली चिट्ठी लिखी है और उसमें कहा है कि यह कदम 'जल्दबाजी' में उठाया गया है, क्योंकि राज्यों में विधानसभा चुनाव हो रहे हैं और आदर्श आचार संहिता लागू है। पत्र में कहा गया है, 'हम राज्य चुनावों के बीच जल्दबाजी में यह संयुक्त सत्र आहूत किए जाने की निंदा करते हैं।' पत्र में कहा गया है, 'सरकार ने महिलाओं के समूहों को अपनी सिफारिशें रखने के लिए पर्याप्त समय नहीं दिया।' अपनी मुख्य मांगों को उजागर करते हुए, हस्ताक्षरकर्ताओं ने कहा कि सरकार को 'बिलों के ड्राफ़्ट का मूल पाठ तुरंत सार्वजनिक करना चाहिए।

95 शहरों के 488 सामाजिक कार्यकर्ताओं की खुली चिट्ठी

आई-पैक पर ईडी का ऐक्शन

डायरेक्टर विनेश चंदेल दिल्ली से गिरफ्तार

नई दिल्ली (एजेंसी)। राजनीतिक पार्टियों को सलाह देने का काम करने वाली फर्म आई-पैक के निदेशक और सह संस्थापक विनेश चंदेल को प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) ने गिरफ्तार कर लिया है। एजेंसी की तरफ से सोमवार को बताया गया कि पश्चिम बंगाल में कथित कोयला घोटाले से जुड़े मनी लॉन्ड्रिंग केस के मामले में उनकी गिरफ्तारी की गई है।

इससे पहले 2 अप्रैल को ईडी ने चंदेल के दिल्ली स्थित कार्यालय, आई-पीएसी के सह-संस्थापक ऋषि राज सिंह के बेंगलुरु स्थित कार्यालय और आम आदमी पार्टी के पूर्व संचार प्रभारी विजय नायर के मुंबई स्थित कार्यालय सहित कई स्थानों पर तलाशी अभियान चलाया था। केंद्रीय जांच एजेंसी ने 8 जनवरी को इस मामले के सिलसिले में आई-पीएसी कार्यालय और इसके संस्थापक और निदेशकों में से एक प्रतीक जैन के कोलकाता स्थित आवास पर छापेमारी की थी। इस छापेमारी के बाद उस समय विवाद खड़ा हो गया जब पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी राज्य सरकार के अधिकारियों के साथ उक्त स्थानों पर पहुंचीं। इसके बाद यह मामला कोर्ट भी पहुंचा था, जहां ममता बनर्जी को कोर्ट ने फटकार भी लगाई थी।

कौन हैं प्रफुल्ल हिंगे, IPL डेब्यू में पहले ओवर में 3 विकेट लेकर रच दिया इतिहास, सूर्यवंशी को भी नहीं बक्शा

नई दिल्ली (एजेंसी)। आईपीएल 2026 के 21वें मुकाबले में सनराइजर्स हैदराबाद की ओर से डेब्यू करने वाले प्रफुल्ल हिंगे ने इतिहास रच दिया है। वे आईपीएल के डेब्यू मैच में पारी के पहले ओवर में तीन विकेट लेने वाले पहले गेंदबाज बन गए हैं। उनसे पहले इतिहास में ऐसा किसी भी गेंदबाज ने नहीं किया है। सनराइजर्स हैदराबाद की ओर से पारी का पहला ओवर डालने आए 24 वर्षीय प्रफुल्ल हिंगे ने अपनी दूसरी ही गेंद पर 15 वर्षीय वंडर बॉय वैभव सूर्यवंशी को एक तेज गति की उछलती हुई गेंद पर विकेटकीपर के हाथों कैच आउट कराया। इसके बाद बल्लेबाजी करने आए ध्रुव जुरैल भी उनकी स्पीड को नहीं संभाल सके और आउट हो गए।

घरलू क्रिकेट में ऐसा रहा है प्रदर्शन

आईपीएल में पदार्पण से पहले हिंगे ने केवल एक टी20 मैच खेला था, जो उन्होंने 2025/26 सैयद मुश्ताक अली ट्रॉफी में विदर्भ की ओर से आंध्र प्रदेश के खिलाफ खेला था। उन्होंने अपने चार ओवरों में 1-23 के आंकड़े दर्ज किए, जिसमें आंध्र प्रदेश के कप्तान रिकी भुई को आउट करना शामिल था और इस मैच में विदर्भ ने 19 रन से जीत हासिल की थी। हिंगे ने जनवरी 2025 में लिस्ट-ए क्रिकेट में पदार्पण किया था और विदर्भ की उस टीम का हिस्सा थे जिसने 2025/26 विजय हजारे ट्रॉफी जीती थी। उन्होंने पांच मैचों में 56.60 की औसत से पांच विकेट लिए थे। हिंगे ने विदर्भ को 2024/25 रणजी ट्रॉफी का खिताब दिलाने में भी अहम भूमिका निभाई थी, जो उनका पहला प्रथम श्रेणी क्रिकेट सीजन था। उन्होंने चार मैचों में 27.09 की औसत से 11 विकेट लिए थे। इसके बाद रणजी लीग के अगले सीजन में इस दाएं हाथ के तेज गेंदबाज ने नियमित रूप से खेलना शुरू किया और छह मैचों में 26.37 की औसत से 16 विकेट लिए, जिसमें उनका सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन 4-60 रहा।

सीएम के इस्तीफे से पहले मांझी भावुक हुए

वी विल मिस यू नीतीश जी, करोड़ों दिलों को रूला दिया

पटना (एजेंसी)। नीतीश कुमार के सीएम पद से इस्तीफे से पहले केंद्रीय मंत्री और हिन्दुस्तानी आवाम मोर्चा के सुप्रीमो जीतनराम मांझी ने भावुक पोस्ट किया है। मांझी ने सोशल मीडिया हैंडल पर लिखा है कि नीतीश कुमार एक ऐसे महामानव हैं जिनके बिना बिहार अधूरा है। 2014 में नीतीश कुमार ने जब लोकसभा चुनाव में जदयू की करारी हार की जिम्मेदारी लेते हुए सीएम की कुर्सी छोड़ी थी तो मांझी को ही मुख्यमंत्री बनाया था। हालांकि, जीतन मांझी अधिक दिनों तक मुख्यमंत्री नहीं रह सके।

सोशल मीडिया हैंडल एक्स पर जीतनराम मांझी ने अपना दिल उड़ेल कर रख दिया। वे लिखते हैं, ' नीतीश जी,अगले चौबीस घंटे में आप बिहार के मुख्यमंत्री पद को छोड़ देंगें। सबको पता है कि आपका यह ख्वाब था कि आप देश के चारों सदनों के सदस्य रहें पर आपके इस ख्वाब ने करोड़ों दिलों को रूला दिया है। नीतीश जी बिहार ने कई मुख्यमंत्रियों को आते-जाते देखा है पर शायद ये पहला मौक़ा है जब आपको मुख्यमंत्री पद की छोड़ने की बातों सुनकर ही करोड़ों लोगों के आँखों में आँसू भर आएं हैं। भले ही मुख्यमंत्री पद को छोड़ने का फ़ैसला आपका अपना फ़ैसला है जिसपर कोई सवाल नहीं खड़ा कर सकता पर बिहार आज ग़मज़दा है। हर बिहारी कह रहा है...वी विल मिस यू नीतीश जी... आप महामानव हैं,बिहार आपके बिना अधूरा है ' ।

जीतनराम मांझी और नीतीश कुमार के बीच राजनैतिक विरोधाभाष भी रहे। ऐसा भी मौका आया जब जीतनराम मांझी और नीतीश कुमार के बीच तीखी नोक झोंक हुई। दोनों नेताओं ने एक दूसरे पर जुबानी हमला किया। नीतीश कुमार को अपना आका बताने वाले जीतन मांझी ने अपनी पार्टी को महागठबंधन से यह कहकर अलग कर लिया कि उनकी पार्टी तो समाप्त करने की साजिश की जा रही थी। लेकिन, समय के साथ मांझी फिर से नीतीश कुमार के पाले में चले गए। आज जब नीतीश कुमार दिल्ली की राजनीति में शिफ्ट हो रहे हैं तो जीतनराम मांझी भावुक हो रहे हैं। राजनैतिक गलियारे में चर्चा है कि 14 अप्रैल को कैबिनेट की बैठक के बाद नीतीश कुमार सीएम पद से इस्तीफा दे देंगे। इसी के साथ बिहार में 20 साल पुराने नीतीश युग का अंत हो जाएगा। बीजेपी अपने दल से किसी नेता को सीएम पद का चेहरा बनाएगी। संभव है कल ही राज्यपाल के सामने नई सरकार का दावा भी पेश कर दिया जाए। 15 अप्रैल को नई सरकार के शपथ ग्रहण समारोह की तैयारी की जा रही है। राज्यपाल के सचिव, सीएम के सलाहकार, पटना डीएम, एसएसपी, कमीश्नर ने सम्राट चौधरी के सरकारी आवास पर जाकर मुलाकात की। जदयू और बीजेपी के नेताओं की सम्राट चौधरी के आवास पर दिन भर आना जाना लगा रहा।

बिहार में नए मुख्यमंत्री का आज होगा ऐलान, एनडीए की तीन अहम बैठकें तय

नीतीश कुमार कैबिनेट की आखिरी बैठक के बाद देंगे इस्तीफा, 15 अप्रैल को नई सरकार का शपथ ग्रहण संभव

पटना (संवाददाता)।

बिहार की राजनीति में बड़ा बदलाव होने जा रहा है। मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के पद छोड़ने के फैसले के बाद भाजपा के नेतृत्व में नई एनडीए सरकार के गठन की पूरी रूपरेखा तैयार हो गई है। 14 अप्रैल को दिनभर होने वाली तीन महत्वपूर्ण बैठकों में नए मुख्यमंत्री के नाम पर अंतिम मुहर लग जाएगी, जबकि 15 अप्रैल को नई सरकार का शपथ ग्रहण होने की संभावना है।

जानकारी के अनुसार, मुख्यमंत्री नीतीश कुमार 14 अप्रैल की सुबह 11 बजे अपनी कैबिनेट की आखिरी बैठक करेंगे। इस बैठक के बाद वह राजभवन जाकर मुख्यमंत्री पद से इस्तीफा देंगे और इसके साथ ही नई सरकार बनाने की प्रक्रिया औपचारिक रूप से शुरू हो जाएगी। इस्तीफा देने के बाद दोपहर 2 बजे मुख्यमंत्री आवास पर जनता दल यूनाइटेड (जेडीयू) विधायक दल की बैठक होगी, जिसमें नए नेता का चुनाव किया जाएगा, क्योंकि नीतीश कुमार अब सांसद बनने के बाद विधायक दल के नेता नहीं रहेंगे।

इसके बाद राजनीतिक गतिविधियों का केंद्र भाजपा की बैठक होगी। शाम 3 बजे भाजपा विधायक दल की बैठक बुलाई गई है, जिसमें केंद्रीय मंत्री और पूर्व मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान पर्यवेक्षक के रूप में शामिल होंगे। इसी बैठक में भाजपा विधायक दल का नेता चुना जाएगा, जो बिहार का अगला मुख्यमंत्री बनेगा। भाजपा का यह नेता ही बाद में एनडीए विधायक दल की बैठक में गठबंधन का नेता चुना जाएगा। शाम 4 बजे विधानमंडल परिसर के सेंट्रल हॉल में एनडीए विधायक दल की संयुक्त बैठक होगी, जिसमें भाजपा, जेडीयू, लोजपा (रामविलास), हम और रालोमो के विधायक शामिल होंगे। इस बैठक में भाजपा विधायक दल के नेता को औपचारिक रूप से एनडीए का नेता चुना जाएगा और इसके बाद नई सरकार बनाने का दावा पेश किया जाएगा।

बताया जा रहा है कि 15 अप्रैल को नए मुख्यमंत्री के साथ सीमित संख्या में मंत्रियों को शपथ दिलाई जाएगी। मंत्रिमंडल का विस्तार बाद में किया जाएगा। शपथ ग्रहण समारोह में गृह मंत्री अमित शाह और भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष के शामिल होने की संभावना है, जबकि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के शामिल होने को लेकर अभी स्थिति स्पष्ट नहीं है। मुख्यमंत्री पद की दौड़ में भाजपा के कई बड़े नेताओं के नाम चर्चा में हैं। इनमें वर्तमान डिप्टी सीएम और विधायक दल के नेता सम्राट चौधरी सबसे मजबूत दावेदार माने जा रहे हैं। इसके अलावा केंद्रीय मंत्री नित्यानंद राय, विजय कुमार सिन्हा, पूर्व डिप्टी सीएम रेणु देवी, दिलीप जायसवाल, संजय जायसवाल, जनक राम और संजीव चौरसिया के नाम भी चर्चा में हैं। हालांकि अंतिम निर्णय भाजपा नेतृत्व द्वारा विधायक दल की बैठक में लिया जाएगा।

इस बीच पटना में सरकार गठन को लेकर बैठकों का दौर तेज हो गया है। डिप्टी सीएम सम्राट चौधरी का आवास इन बैठकों का प्रमुख केंद्र बना हुआ है, जहां एनडीए के कई वरिष्ठ नेताओं ने मुलाकात की है। एनडीए के सभी घटक दलों ने अपने विधायकों को 14 और 15 अप्रैल को पटना में मौजूद रहने का निर्देश दिया है। बिहार में भाजपा के नेतृत्व में बनने जा रही यह पहली एनडीए सरकार होगी, इसलिए राजनीतिक हलचल चरम पर है और पूरे राज्य की नजरें अब मंगलवार को होने वाली भाजपा विधायक दल की बैठक पर टिकी हैं, जहां से बिहार के नए मुख्यमंत्री के नाम की आधिकारिक घोषणा होगी।

अपने ही घर में नितिन नवीन को भूली भाजपा

बिहार में मोदी के साथ अब भी लग रहा नड्डा का फोटो!

पटना (संवाददाता)। बिहार में पहली बार अपना मुख्यमंत्री और अपनी अगुवाई में एनडीए सरकार बनाने जा रही भारतीय जनता पार्टी (बीजेपी) के प्रदेश कार्यालय में प्रेस कॉन्फ्रेंस के पोस्टर पर पार्टी के पूर्व अध्यक्ष जगत प्रकाश नड्डा का फोटो अध्यक्ष की जगह छप जा रहा है।

बिहार के ही रहने वाले और पटना में कई बार विधायक और मंत्री रहे नितिन नवीन चार महीने पहले राष्ट्रीय अध्यक्ष बनकर दिल्ली जा चुके हैं। वैसे, जगत प्रकाश नड्डा भले मूल रूप से हिमाचल प्रदेश के हों, लेकिन उनका भी जन्म और उनकी ग्रेजुएशन तक की पढ़ाई पटना में ही हुई है।

आंबेडकर जयंती के मौके पर अपने कार्यक्रम और तैयारियों की जानकारी देने के लिए 12 अप्रैल को भाजपा ने प्रदेश कार्यालय में एक संवाददाता सम्मेलन बुलाया था, जिस दौरान यह पोस्टर लगा दिया गया। प्रेस कॉन्फ्रेंस शुरू होने से पहले ही इस भूल पर नेताओं की नजर गई तो इस पोस्टर को हटा दिया गया और पार्टी कार्यालय के अटल सभागार के मूल बैकग्राउंड पर पीसी संपन्न हुई। उस पोस्टर में प्रदेश नेतृत्व से बिहार अध्यक्ष संजय सरावगी और दोनों डिप्टी सीएम सम्राट चौधरी, विजय कुमार सिन्हा का फोटो है लेकिन राष्ट्रीय नेतृत्व से पीएम नरेंद्र मोदी के साथ पूर्व अध्यक्ष जेपी नड्डा की तस्वीर है। अब भाजपा के पोस्टर-बैनर में उस जगह पर नितिन नवीन के फोटो लगते हैं। नड्डा वाला पोस्टर हटाकर जो प्रेस कॉन्फ्रेंस हुई, वो फोटो आप नीचे देख सकते हैं।

पीसी में राज्य सरकार के अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति (एससी-एसटी) कल्याण मंत्री और भाजपा के नेता लखेंद्र पासवान ने बताया था कि 13 अप्रैल को बापू सभागार में उनका विभाग जयंती से पहले एक दिन का समग्र शिक्षा समागम कार्यक्रम आयोजित कर रहा है। इस कार्यक्रम में उन्होंने सीएम नीतीश कुमार के आने की बात कही थी, लेकिन आज कार्यक्रम में डिप्टी सीएम सम्राट चौधरी के अलावा अन्य नेता ही पहुंचे। लखेंद्र पासवान ने बताया था कि 13 अप्रैल को बाबा साहेब आंबेडकर की मूर्ति और प्रतिमाओं की साफ-सफाई करके जयंती कार्यक्रम आयोजित होंगे। लखेंद्र पासवान ने कहा है कि भाजपा अगले 20 दिनों तक आंबेडकर को केंद्र में रखकर गांव-गांव में विविध कार्यक्रम करेगी। भाजपा का 14 अप्रैल को भी पटना से लेकर प्रदेश के सभी जिलों में आंबेडकर जयंती कार्यक्रम है।

मोदी और शाह के हाथ में होगा बिहार सीएम का रिमोट

प्रशांत किशोर ने नई सरकार पर की 2 भविष्यवाणी

पटना (संवाददाता)। बिहार में नई सरकार गठन से पहले जन सुराज के संयोजक प्रशांत किशोर ने दो भविष्यवाणी की है। उन्होंने कहा है कि कोई भी सीएम बने लेकिन रिमोट कंट्रोल अमित शाह और पीएम नरेंद्र मोदी के हाथ में होगा। सरकार की प्राथमिकता बिहार की जनता की भलाई नहीं बल्कि गुजरात की फैक्ट्रियों के लिए मजदूर का जुगाड़ करना होगा। उन्होंने यह भी दावा किया कि नई सरकार बिहार से बेरोजगारी, बदहाली, पलायन, शिक्षा, स्वास्थ्य जैसी समस्याओं को दूर नहीं कर पाएगी।

पत्रकारों के सवाल पर प्रशांत किशोर ने कहा कि नीतीश कुमार को 202 विधायकों की ताकत हासिल है। लेकिन, यह लोकप्रियता का नहीं बल्कि मैन्यूफैक्चर्ड मैंडेट है जो लोगों को 10 10 हजार देकर प्राप्त किया गया है। इसी वजह से नीतीश कुमार को पद छोड़ना पड़ रहा है। अब सीएम की कुर्सी पर वही बैठेगा जिसे गुजरात के नरेंद्र मोदी और अमित शाह चाहेंगे। पहली बार ऐसा होगा जब बिहार के मुख्यमंत्री की प्राथमिकता बिहार में सुधार नहीं बल्कि गुजरात का विकास होगा। बिहार से सस्ते मजदूर गुजरात की फैक्ट्रियों के लिए भेजे जाएंगे। यहां से ट्रेन और बस में भर कर 10 से 12 हजार मासिक के मजदूर गुजरात भेजे जाएंगे। यह मेरी भविष्यवाणी है। प्रशांत किशोर ने आगे कहा कि बिहार में व्यक्ति के तौर पर चाहे कोई भी सीएम बने पर उसका रिमोट कंट्रोल मोदी जी और अमित शाह के हाथ में होगा। गुजरात के लोग फैक्ट्रियों के मालिक रहेंगे और बिहार के बेरोजगार वहां मजदूरी करेंगे।

दूसरी भविष्यवाणी के तौर पर प्रशांत किशोर ने कहा कि सरकार चाहे किसी की बने पर बिहार से बेरोजगारी, भ्रष्टाचार, पलायन, शिक्षा की बदहाली, पलायन जैसी समस्याएं दूर नहीं होंगी। इसकी वजह यह है कि लोगों ने इसके लिए वोट नहीं दिया है। लोगों ने दस हजार के लालच में वोट बेचा है तो इमानदार सरकार की कल्पना नहीं की जा सकती। इसमें जन सुराज भी कोई मदद नहीं कर सकता क्योंकि यह काम उनका है जो सत्ता में हैं। बिहार के लोगों ने ऐसे व्यक्ति को वोट दिया जो खुद पलायन कर गया।

नालंदा में रणक्षेत्र बना सरकारी अस्पताल, जमकर चले लात-घूंसे

नालंदा (संवाददाता)।

बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के जिले नालंदा के सदर अस्पताल के इमरजेंसी गेट पर

सोमवार को उस समय अफरा-तफरी मच गई, जब एक मरीज को लेकर पहुंचे परिजनों और सुरक्षा गार्ड के बीच विवाद बढ़ते-बढ़ते मारपीट में बदल गया। दोनों पक्षों के बीच जमकर लात-घूंसे चले और करीब 10 मिनट तक अस्पताल परिसर में तनावपूर्ण माहौल बना रहा। घटना के दौरान मौके पर भारी भीड़ जुट गई, जिससे अस्पताल की व्यवस्था कुछ देर के लिए बाधित हो गई।

प्रत्यक्षदर्शियों का कहना है कि एक मरीज की हालत गंभीर थी, जिसे लेकर परिजन जल्द से जल्द इमरजेंसी वार्ड में पहुंचना चाहते थे।

इसी दौरान गेट पर तैनात सुरक्षा गार्ड ने उन्हें रोक दिया और कहा कि अस्पताल के नियमों के अनुसार सीमित संख्या में ही लोगों को अंदर जाने की अनुमति है। इस पर परिजन आक्रोशित हो गए और मरीज की गंभीर स्थिति का हवाला देते हुए तुरंत अंदर जाने की मांग करने लगे।

देखते ही देखते मामला कहासुनी से बढ़कर तीखी नोकझोंक में बदल गया। आरोप है कि इसी दौरान गार्ड और परिजनों के बीच धक्का-मुक्की शुरू हो गई, जो बाद में मारपीट में तब्दील हो गई। दोनों पक्षों के बीच हाथापाई और लात-घूंसे चलने से वहां मौजूद अन्य मरीज और उनके परिजन भी सहम गए। कुछ लोग बीच-बचाव की कोशिश करते रहे, लेकिन स्थिति कुछ समय तक नियंत्रण से बाहर रही। घटना की जानकारी मिलते ही अस्पताल के अन्य सुरक्षा कर्मी और कर्मचारी मौके पर पहुंचे। उन्होंने काफी मशक्कत के बाद दोनों पक्षों को अलग कर स्थिति को शांत कराया। हालांकि, इस दौरान अस्पताल में आने-जाने वाले मरीजों और उनके परिजनों को काफी परेशानी झेलनी पड़ी और कुछ समय के लिए इमरजेंसी सेवाएं भी प्रभावित हुईं।

मरीजों के परिजन हुए आक्रोशित

घटना के बाद मरीज के परिजनों में आक्रोश देखा गया। उनका आरोप है कि अस्पताल में सुरक्षा कर्मियों का व्यवहार अक्सर असहयोगात्मक और असंवेदनशील रहता है। उन्होंने कहा कि लोग मजबूरी में अस्पताल आते हैं और ऐसे समय में सहानुभूति व मानवीय व्यवहार की अपेक्षा रखते हैं, लेकिन इसके विपरीत उन्हें अपमान और दुर्व्यवहार का सामना करना पड़ता है। वहीं, अस्पताल प्रशासन की ओर से मामले को गंभीरता से लेते हुए सिविल सर्जन डॉक्टर जयप्रकाश सिंह ने जांच के आदेश दिए गए हैं। अस्पताल प्रशासन के प्रतिनिधि मोहम्मद इमरान को जांच का जमा दिया गया है उन्होंने बताया कि जांच के बाद जो भी दोषी होंगे उन पर कार्रवाई की जाएगी। पता लगाया जा रहा है कि मरीज के परिजनों के साथ सुरक्षा कर्मियों ने कैसा बर्ताव किया।

बिहार के 163 बच्चे मध्य प्रदेश में रेस्क्यू, ट्रेन से महाराष्ट्र भेजे जा रहे थे; ट्रैफिकिंग के आरोप में 8 गिरफ्तार

अररिया (संवाददाता)।

बिहार में मानव तस्करी का जाल किस कदर फैल चुका है, इसकी एक भयावह तस्वीर मध्य प्रदेश के कटनी से सामने आई है। बिहार के अररिया और अन्य जिलों से मजदूरी के लिए महाराष्ट्र ले जाए जा रहे 163 नाबालिगों को कटनी रेलवे स्टेशन पर एक बड़े रेस्क्यू ऑपरेशन के बाद मुक्त कराया गया है। आरपीएफ और जीआरपी की संयुक्त टीम ने पटना-पूर्णा एक्सप्रेस में छापेमारी कर इन बच्चों को तस्करों के चंगुल से छुड़ाया। इस मामले में बिहार के ही रहने वाले 8 आरोपियों को गिरफ्तार किया गया है।

शुरुआती जांच में यह बात सामने आई है कि इन बच्चों को बिहार के अररिया जिले से इकट्ठा किया गया था और इन्हें महाराष्ट्र के लातूर ले जाया जा रहा था। तस्करी के इस खेल का पता तब चला जब आरपीएफ को गुप्त सूचना मिली कि एक बड़े समूह में बच्चों को बिना किसी वैध दस्तावेज और टिकट के ले जाया जा रहा है। पकड़े गए सभी बच्चों की उम्र महज 6 से 13 वर्ष के बीच है।

आरपीएफ कटनी के निरीक्षक वीरेंद्र सिंह के नेतृत्व में यह अभियान शनिवार की पूरी रात चला और रविवार तड़के तक मासूमों को ट्रेन से उतारकर सुरक्षित किया गया। तस्करों के पास बच्चों से संबंधित कोई पहचान नहीं था। बच्चों को भेड़-बकरियों की तरह कोच में भरकर ले जाया जा रहा था। रेलवे अधिकारियों के अनुसार, इन बच्चों को महाराष्ट्र में बंधुआ मजदूरी करवाने के मकसद से ले जाया जा रहा था।

बिहार के 8 को पुलिस ने किया गिरफ्तार

जीआरपी ने बिहार के विभिन्न जिलों के रहने वाले 8 आरोपियों को गिरफ्तार किया गया है। इन सभी पर भारतीय न्याय संहिता की धारा 143 के तहत मामला दर्ज किया गया है। यह कानून 18 वर्ष से कम उम्र के बच्चों की तस्करी से संबंधित है, जिसमें दोषियों को कम से कम 10 वर्ष की कठोर सजा का प्रावधान है। पुलिस अब इस बात की जांच कर रही है कि बिहार में इस सिंडिकेट के तार और कहाँ-कहाँ जुड़े हैं।

बच्चों के परिजनों में नाराजगी

इधर जोकीहाट से बच्चों से जुड़े लोगों ने बताया है कि बच्चों को पढ़ाई के लिए मदरसे में ले जाया जा रहा था जिन्हें पुलिस ने रोक दिया। अभिभावकों ने ट्रैफिकिंग के आरोपों से इनकार करते हुए नाराजगी जाहिर की है और मध्य प्रदेश पुलिस से मामले की गहन जांच की मांग की है। उन्होंने पुलिस की कार्य प्रणाली पर आपत्ति जाहिर किया है।

धर्मनगरी में महापाप

चचेरे भाई समेत 4 लड़कों नाबालिग से किया गैंगरेप, प्रेमी के साथ थी लड़की

गयाजी (संवाददाता)।

बिहार की धर्मनगरी गयाजी में महापाप हुआ। जिले के आमस थाना क्षेत्र के एक गांव में रिश्तों को शर्मसार करने वाली एक घटना हुई। रविवार की देर रात एक नाबालिग बच्ची के साथ चार लोगों ने सामूहिक दुष्कर्म किया। इसमें पीड़िता का सगा चचेरा भाई भी शामिल है। इस मामले में घटना में संलिप्त चारों आरोपियों को गिरफ्तार कर लिया है। एक भाई की करतूत से पूरा गांव शर्मसार महसूस कर रहा है। घटना के आरोपियों के खिलाफ कठोर कार्रवाई की मांग की गई है।

सोमवार सुबह मामला पुलिस के संज्ञान में आया तो इलाके में हड़कंप मच गया। पुलिस के मुताबिक, रविवार रात गांव में आयोजित एक भोज के दौरान नाबालिग गांव के बाहर बधार में अपने कथित प्रेमी से मिलने गई थी। प्रेमी गुरुआ थाना क्षेत्र के एक गांव का निवासी है और वहां टेंट संचालन का कार्य करने आया था। इसी बीच, पीड़िता का चचेरा भाई अपने तीन अन्य साथियों के साथ वहां पहुंच गया। पीड़िता ने पुलिस को बताया कि आरोपियों ने उसे प्रेमी के साथ बधार में पकड़ लिया। चारों ने मिलकर पहले प्रेमी युवक की बेरहमी से पिटाई की। डर के मारे वह मौके से भाग निकला। उसके बाद लड़की को धमकाया कि गांव में जाकर सबको बता देंगे। लड़की लोकलाज से गिड़गिड़ाने लगी। उसकी मजबूरी का फायदा उठाकर चारों ने एक-एक कर नाबालिग के साथ सामूहिक दुष्कर्म किया। यहां तक उसके चचेरे भाई ने भी उसे नहीं छोड़ा।

गांजा तस्करी में 14 वर्ष की हुई कैद

पटना (संवाददाता)। एनडीपीएस एक्ट की विशेष अदालत ने गांजा तस्करी के आरोप में नेबी सिंह को 14 वर्ष की सजा और 2 लाख रुपये का जुर्माना सुनाया। विशेष लोक अभियोजक ने गवाहों और साक्ष्यों के आधार पर आरोपी को दोषी करार दिया। आरोपी को 2020 में दीदारगांज चेक पोस्ट पर 14 क्विंटल गांजा के साथ पकड़ा गया था। एनडीपीएस एक्ट की विशेष अदालत ने सोमवार को गांजा तस्करी के जुर्म में आरोपी नेबी सिंह को 14 वर्ष का सश्रम कारावास और दो लाख रुपया जुर्माना की सजा सुनायी है।

‘गांव चलो अभियान’ के तहत जनसंवाद, समस्याओं के त्वरित समाधान पर जोर

रायगढ़ के ग्रामीण क्षेत्रों में विकास को मिल रही नई गति: वित्त मंत्री ने करोड़ों रुपयों के कार्यों की दी सौगात

रायपुर।

जिले के ग्रामीण अंचलों में अधोसंरचना और बुनियादी सुविधाओं के विस्तार को नई दिशा देते हुए प्रदेश के वित्त मंत्री एवं रायगढ़ विधायक श्री ओ.पी.चौधरी ने रायगढ़ विधानसभा क्षेत्र के विभिन्न ग्रामों में करोड़ों रुपये के विकास कार्यों का लोकार्पण एवं भूमिपूजन किया। ‘गांव चलो अभियान’ के तहत क्षेत्र के प्रवास पर पहुंचे वित्त मंत्री ने कहा कि सरकार का उद्देश्य विकास को अंतिम व्यक्ति तक पहुंचाना है और इसके लिए लगातार जमीनी स्तर पर कार्य किए जा रहे हैं।

इस दौरान ग्राम-सूरजगढ़ में लगभग 192.92 लाख रुपये की लागत से निर्मित सूरजगढ़-पड़िगांव से तेलीपाली सड़क का लोकार्पण किया गया, जिससे क्षेत्र के लोगों को बड़ी राहत मिलेगी और यातायात सरल व सुगम होगा। वहीं ग्राम टिनमिनी में 12 लाख रुपये की लागत से शेड तथा 5.20 लाख रुपये की लागत से विक्रम घर से स्कूल तक सीसी रोड का लोकार्पण किया गया। इस अवसर पर कक्षा 12वीं की छात्रा अंजली सतपति को उनकी शैक्षणिक उपलब्धि के लिए सम्मानित किया गया। ग्राम पंचायत नावापाली में 7.50 लाख रुपये की लागत से सांस्कृतिक शेड का लोकार्पण किया गया, जिससे ग्रामीणों को सामाजिक एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों के लिए बेहतर सुविधा उपलब्ध होगी। इसी क्रम में पड़िगांव में जगन्नाथ मंदिर के पास 7 लाख रुपये की लागत से निर्मित शेड का लोकार्पण किया गया। साथ ही यहां 20 लाख रुपये की लागत से बनने वाले सामुदायिक भवन तथा चौहान मोहल्ला में 10 लाख रुपये की लागत से शेड निर्माण कार्य का भूमिपूजन भी किया गया। ग्राम गुडू में वार्ड क्रमांक 01 में 10 लाख रुपये की लागत से बनी सीसी रोड का लोकार्पण किया गया, वहीं 10.40 लाख रुपये की लागत से बनने वाली एक अन्य सीसी रोड का भूमिपूजन किया गया। वित्त मंत्री श्री ओ.पी. चौधरी ने टिनमिनी सहित अन्य गांवों में ‘गांव चलो अभियान’ के तहत चौपाल लगाकर ग्रामीणों से सीधा संवाद किया, उनकी समस्याएं सुनीं और अधिकारियों को त्वरित एवं गुणवत्तापूर्ण समाधान सुनिश्चित करने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि सरकार विकास के प्रति पूरी तरह प्रतिबद्ध है और इन कार्यों से न केवल बुनियादी सुविधाएं बेहतर होंगी, बल्कि ग्रामीण अर्थव्यवस्था को भी नई मजबूती मिलेगी। इस अवसर पर स्थानीय जनप्रतिनिधि, गणमान्य नागरिक, ग्राम के सरपंच, संबंधित अधिकारी-कर्मचारी तथा बड़ी संख्या में ग्रामीणजन उपस्थित रहे। इस अवसर पर स्थानीय जनप्रतिनिधि, गणमान्य नागरिक, ग्राम के सरपंच, संबंधित अधिकारी-कर्मचारी तथा बड़ी संख्या में ग्रामीणजन उपस्थित रहे।

जिले के अंतिम छोर तक पहुंची शासन की योजनाओं का लाभ

रायपुर।

राज्य शासन के निर्देशानुसार विकासखण्डवार जिला स्तरीय जनसमस्या निवारण शिविरों का लगातार आयोजन किया जा रहा है, जिसके माध्यम से शासन की विभिन्न योजनाओं का लाभ दूरस्थ अंचलों के गांवों तक पहुंचाया जा रहा है। इसी क्रम में बीते दिनों कोंडागांव जिले के केशकाल विकासखंड अंतर्गत जिले के सीमा पर स्थित ग्राम चुरेगांव में जनसमस्या निवारण शिविर आयोजित किया गया, जहां बड़ी संख्या में ग्रामीणों को शासन की महत्वाकांक्षी योजनाओं से लाभान्वित किया गया। शिविर में कलेक्टर श्रीमती नूपुर राशि पन्ना ने ग्रामीणों से आत्मीय संवाद कर उनकी समस्याओं को गंभीरता के साथ सुना। इस दौरान कलेक्टर, जिला पंचायत सदस्य श्री कपिल नाग, जनपद सदस्य श्री घसियाराम सेठिया सहित स्थानीय जनप्रतिनिधियों ने विभिन्न विभागों द्वारा लगाए गए स्टॉलों का अवलोकन कर प्राप्त आवेदनों को जानकारी ली और निराकरण हेतु निर्देशित किया।। कलेक्टर ने कहा कि इन शिविरों का उद्देश्य शासन की योजनाओं का लाभ अंतिम छोर तक पहुंचाना है, ताकि ग्रामीणों को अपनी समस्याओं के समाधान हेतु ब्लॉक या जिला मुख्यालय तक न आना पड़े। उन्होंने आश्वस्त किया कि शिविर में प्राप्त सभी आवेदनों एवं समस्याओं का प्राथमिकता के आधार पर निराकरण किया जाएगा। उन्होंने श्रम पंजीयन के लाभों की जानकारी देते हुए ग्रामीण महिलाओं को आजीविका संवर्धन हेतु ई-रिक्शा योजना का लाभ लेने के लिए प्रेरित किया। साथ ही पशुपालन विभाग की योजनाओं से जुड़ने एवं विकसित भारत जीरामजी योजना के अंतर्गत शेड निर्माण का लाभ उठाने की अपील की। शिविर में ग्रामवासियों से विभिन्न मांगों और समस्याओं को लेकर कुल 84 आवेदन प्राप्त हुए। शिविर स्थल में समाज कल्याण विभाग द्वारा दिव्यांगजनों को 04 ट्रायसायकल एवं 01 बैसाखी वितरित की गई। मुख्यमंत्री पेंशन सहायता योजना के अंतर्गत 03 हितग्राहियों को पेंशन स्वीकृत की गई। इसी प्रकार 13 आधार कार्ड, 7 जाति प्रमाण पत्र, श्रम विभाग द्वारा 11 श्रम कार्ड, खाद्य विभाग द्वारा 14 राशन कार्ड, उद्यान विभाग द्वारा 03 वर्मी बेड प्रदान किए गए। राजस्व विभाग द्वारा 15 किसान किताब, कृषि विभाग द्वारा 10 हितग्राहियों को रागी बीज वितरण और वन विभाग द्वारा राजमोहिनी देवी तेंदूपत्ता संग्राहक बीमा योजना के अंतर्गत ग्राम हिचका की श्रीमती सुनीता मंडावी को 02 लाख रुपए एवं ग्राम कावागांव की श्रीमती सुपोतिन कोर्राम को 30 हजार रुपए की सहायता राशि का चेक प्रदान किया गया। साथ ही वन विभाग द्वारा 200 पौधे का भी वितरण किया गया। कभी लाल आतंक से प्रभावित रहे चुरेगांव जैसे अंदरूनी गांव में आयोजित इस शिविर के दौरान ग्रामीणों द्वारा पारंपरिक पेय ‘मड़िया पेज’ की व्यवस्था की गई थी। कलेक्टर श्रीमती नूपुर राशि पन्ना ने ग्रामीण महिलाओं के बीच पहुंचकर मड़िया पेज का स्वाद लिया और उनकी सराहना की। इस अवसर पर जिला पंचायत सीईओ श्री अविनाश भोई, एसडीएम सुश्री आकांक्षा नायक, तहसीलदार श्री विजय मिश्रा, श्री संतोष सिन्हा, जनपद पंचायत सीईओ श्री अनुराग सिन्हा, सरपंचगण, स्थानीय जनप्रतिनिधिगण एवं विभिन्न विभागों के अधिकारी उपस्थित रहे।

पीवीटीजी परिवारों के विकास की नई पहल- मोबाइल ऐप से घर-घर सर्वे शुरू

बैगा-बिरहोर बसाहटों में आधारभूत सर्वेक्षण प्रारंभ, योजनाओं से जुड़ेंगे हर परिवार

रायपुर।

विशेष रूप से कमजोर जनजातीय समूहों (PVTG) के सर्वांगीण विकास के लिए प्रधानमंत्री जनजातीय आदिवासी न्याय महाअभियान (PM-JANMAN) शुरू किया है। इस मिशन का उद्देश्य 18 राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों में 75 PVTG समुदायों को पक्का घर, स्वच्छ जल, शिक्षा, स्वास्थ्य, बिजली और सड़क जैसी बुनियादी सुविधाएँ प्रदान करना है।

बिलासपुर जिले में कलेक्टर श्री संजय अग्रवाल के निर्देशन में प्रधानमंत्री जनजाति आदिवासी न्याय महा अभियान (पीएम जनमन) के तहत विशेष पिछड़ी जनजातियों (PVTG) के लिए आधारभूत सर्वेक्षण कार्य प्रारंभ कर दिया गया है। यह सर्वेक्षण मोबाइल ऐप के माध्यम से किया जा रहा है, जिससे प्रत्येक परिवार तक योजनाओं की पहुंच सुनिश्चित की जा सके। प्रधानमंत्री जनजाति आदिवासी न्याय महा अभियान के अंतर्गत बिलासपुर जिले की 54 बसाहटों में निवासरत विशेष पिछड़ी जनजाति (PVTG) समुदाय, मुख्यत: बैगा और बिरहोर का आधारभूत सर्वेक्षण कार्य शुरू हो गया है। यह सर्वेक्षण आधुनिक तकनीक के उपयोग के साथ मोबाइल ऐप के माध्यम से किया जा रहा है।

सर्वेक्षण दल द्वारा प्रत्येक पीवीटीजी परिवार के घर-घर पहुंचकर सभी सदस्यों की विस्तृत जानकारी एकत्रित की जा रही है। इस दौरान आधार कार्ड, प्रधानमंत्री जनधन खाता, आयुष्मान कार्ड, सिकल सेल कार्ड, टीकाकरण की स्थिति, राशन कार्ड, उज्ज्वला योजना का लाभ, जाति प्रमाण पत्र सहित अन्य आवश्यक दस्तावेजों की जानकारी संकलित की जा रही है। भारत सरकार द्वारा विकसित ‘सर्वे सेतु ऐप’ के माध्यम से यह कार्य रियल टाइम लोकेशन के आधार पर किया जा रहा है, जिससे सर्वेक्षण की पारदर्शिता और सटीकता सुनिश्चित हो रही है। इस डिजिटल प्रक्रिया से न केवल आंकड़ों का त्वरित संकलन संभव हो रहा है, बल्कि भविष्य की योजनाओं के निर्माण में भी सहूलियत मिलेगी। सहायक आयुक्त आदिवासी विकास ने आज कुछ गांवों का दौरा कर सर्वे कार्य का अवलोकन किया। उन्होंने बताया कि इस सर्वेक्षण के माध्यम से पीवीटीजी परिवारों की वास्तविक स्थिति का आंकलन कर उन्हें शासकीय योजनाओं से पूर्ण रूप से जोड़ा जाए और उनके समग्र विकास के लिए प्रभावी कार्ययोजना तैयार की जा सके।

कृषि मंत्री ने वन शहीद स्मारक का किया लोकार्पण

वन, पर्यावरण और वन्यजीवों की सुरक्षा हम सबकी जिम्मेदारी : मंत्री नेताम

रायपुर।

आदिम जाति विकास, कृषि विकास एवं किसान कल्याण तथा जैव प्रौद्योगिकी, मछली पालन, पशुधन विकास मंत्री श्री रामविचार नेताम बलरामपुर-रामानुजगंज जिले के प्रवास पर पहुंचे। इस दौरान उन्होंने वनमंडलाधिकारी कार्यालय परिसर में वन शहीद स्मारक का लोकार्पण किया और श्रद्धांजलि अर्पित की। अन्य जनप्रतिनिधियों एवं अधिकारियों ने भी श्रद्धा सुमन अर्पित किया।

मंत्री श्री रामविचार नेताम ने आयोजित कार्यक्रम में वन शहीदों को श्रद्धा सुमन अर्पित करते हुए कहा कि परिसर में निर्मित शहीद स्मारक उन वन कर्मियों के अदम्य साहस और बलिदान का प्रतीक है, जिन्होंने अपने कर्तव्य पालन के दौरान नक्सलियों के हाथों अपने प्राण न्यौछावर किए। उन्होंने कहा कि दूरस्थ एवं विषम परिस्थितियों में वनों और पर्यावरण की सुरक्षा करना अत्यंत चुनौतीपूर्ण कार्य है। वन कर्मी विपरीत परिस्थितियों में भी अपने दायित्वों का निर्वहन करते हुए वन संपदा और वन्य प्राणियों की रक्षा में जुटे रहते हैं। उन्होंने बताया कि अवैध कटाई, वनाग्नि, अवैध कब्जा और अवैध शिकार जैसी गतिविधियों से वनों को लगातार खतरा बना हुआ है, ऐसे में वन विभाग के कर्मचारियों की भूमिका और भी महत्वपूर्ण हो जाती है। उन्होंने वन शहीदों के बलिदान को स्मरण करते हुए कहा कि उनके द्वारा दिया गया सर्वोच्च बलिदान सदैव प्रेरणा देता रहेगा। उन्होंने कहा कि वनों और पर्यावरण के कारण ही मानव जीवन संभव है, इसलिए इनकी रक्षा करना हम सभी का दायित्व है। मंत्री श्री नेताम ने कहा कि ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाले लोग प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से जंगलों पर आश्रित हैं, इसलिए वनों का संरक्षण अत्यंत आवश्यक है। उन्होंने कहा कि वनाग्नि की घटनाओं से अनेक वनस्पतियां, औषधीय पौधे, जड़ी-बूटियां एवं वन्य प्राणी नष्ट हो रहे हैं, जो अत्यंत चिंता का विषय है। उन्होंने सभी नागरिकों से अपील की कि वे वनों की रक्षा के लिए आगे आएं और अवैध कटाई, अवैध कब्जा एवं वनाग्नि जैसी गतिविधियों को रोकने में सहयोग करें। उन्होंने बढ़ती गर्मी के मौसम में वनाग्नि की घटनाओं को रोकने के लिए सतर्कता बरतने तथा अमानवीय कृत्यों पर सख्ती से कार्रवाई करने की बात कही। मंत्री श्री नेताम ने कहा कि प्रत्येक नागरिक का यह कर्तव्य है कि वह पर्यावरण संरक्षण में अपनी सहभागिता सुनिश्चित करे और आने वाली पीढ़ियों के लिए सुरक्षित एवं समृद्ध वन संपदा का संरक्षण करे। इस अवसर पर रेड क्रॉस सोसायटी के अध्यक्ष श्री ओम प्रकाश जायसवाल, जिला पंचायत उपाध्यक्ष श्री धीरज सिंह देव, नगर पालिका अध्यक्ष श्री लोधी राम एक्का, उपाध्यक्ष श्री दिलीप सोनी, उपाध्यक्ष श्रीमती बबली देवी अन्य जनप्रतिनिधिगण, कलेक्टर श्री राजेंद्र कटारा, पुलिस अधीक्षक श्री वैभव बैंकर, वनमंडलाधिकारी श्री आलोक बाजपेयी एवं अधिकारी-कर्मचारी उपस्थित रहे।

हरी खाद का उपयोग मिट्टी के लिए जीवनदायिनी संजीवनी से कम नहीं

मिट्टी की सांस लौटाएगी हरी खाद- घटती उर्वरता के दौर में किसानों के लिए उम्मीद की हरियाली

रायपुर।

हरी खाद मिट्टी की उपजाऊ शक्ति, जैविक पदार्थ और नत्रजन (नाइट्रोजन) बढ़ाने के लिए उगाई जाने वाली दलहनी फसलें (जैसे-ढैंचा, सनई, मूंग, लोबिया) हैं, जिन्हें फूल आने से पहले खेत में ही जोतकर मिला दिया जाता है। यह मृदा की संरचना सुधारती है, नमी बनाए रखती है और रासायनिक खादों पर निर्भरता कम कर लागत घटाती है। हरी खाद का उपयोग मिट्टी के लिए किसी जीवनदायिनी संजीवनी से कम नहीं है।

उर्वरता तेजी से घट रही धरती जो कभी सोना उगलती थी, आज थकान से बोझिल दिखने लगी है। रासायनिक उर्वरकों की अंधाधुंध दौड़ और लगातार सघन खेती ने मिट्टी की सेहत को भीतर तक कमजोर कर दिया है। ऐसे समय में कृषि विभाग ने किसानों के सामने एक सरल, सस्ता और टिकाऊ उपाय रखा है, हरी खाद, जो सिर्फ खेती नहीं, बल्कि धरती के पुनर्जन्म की कहानी लिख सकती है। कृषि विभाग ने किसानों से अपील की है कि वे इस खरीफ सीजन से ही हरी खाद को अपनाएं। विभाग का मानना है कि बढ़ती जनसंख्या और घटते जोत रकबा के कारण किसान एक ही खेत पर बार-बार खेती करने को मजबूर हैं, जिससे मिट्टी की उर्वरता तेजी से घट रही है।

जैविक कार्बन और जरूरी पोषक तत्वों की कमी अब साफ दिखाई देने लगी है। हरी खाद केवल विकल्प नहीं, बल्कि टिकाऊ खेती की दिशा में निर्णायक कदम है। यह मिट्टी को पुनर्जीवित करने का सबसे सस्ता और प्रभावी माध्यम है। आज जब खेती लागत के बोझ तले दब रही है और मिट्टी अपनी ताकत खो रही है, तब हरी खाद उम्मीद की वह हरियाली है जो धरती को फिर से जीवंत कर सकती है।

यह है हरी खाद- मिट्टी का प्राकृतिक टॉनिक :- कृषि विभाग के अधिकारियों ने बताया कि हरी खाद उन फसलों को कहा जाता है जिन्हें खेत में उगाकर हरी अवस्था में ही मिट्टी में मिला दिया जाता है। ढैंचा, सन, मूंग, उड़द, लोबिया, बरसीम जैसी दलहनी फसलें इसमें प्रमुख हैं। इनकी जड़ों में मौजूद राइजोबियम जीवाणु हवा से नाइट्रोजन लेकर मिट्टी में जमा करते हैं, ठीक वैसे ही जैसे किसान महंगे यूरिया से करता है। हरी खाद का उपयोग मिट्टी के लिए किसी जीवनदायिनी संजीवनी से कम नहीं है।

हरी खाद के लाभ :- हरी खाद से मिट्टी में नाइट्रोजन की पूर्ति होती है, फास्फोरस की घुलनशीलता बढ़ती है, जिंक, आयरन, कॉपर जैसे सूक्ष्म तत्वों की उपलब्धता बढ़ती है। इसके अलावा मिट्टी की संरचना में सुधार, भुरभुरापन, नमी धारण क्षमता में वृद्धि और खरपतवार व कीटों पर प्राकृतिक नियंत्रण भी मिलता है।

नाइट्रोजन की भरपूर आपूर्ति :- ढैंचा एक एकड़ में 55 से 60 किलो नाइट्रोजन देता है, जो करीब 3 बोरी यूरिया के बराबर है। इसके अलावा सनाई 45-50 किलो, बरसीम 48-50 किलो और लोबिया/ग्वारफली 22-30 किलो नाइट्रोजन प्रति एकड़ देती है।

समय का ध्यान ही सफलता की कुंजी :- सिंचित क्षेत्रों में मई में बुवाई करें, असिंचित क्षेत्रों में जून (वर्षा पूर्व) में बुवाई करें। 40-50 दिन बाद हरी अवस्था में ही जुताई कर मिट्टी में मिला दें। कृषि विभाग ने किसानों से अपील की है कि वे इस पारंपरिक लेकिन वैज्ञानिक पद्धति को अपनाएं और अपनी मिट्टी, अपनी आय और आने वाली पीढ़ियों के भविष्य को सुरक्षित करें।

कांग्रेस में राहुल गांधी को हटाने का माहौल बन रहा क्योंकि..., महाराष्ट्र CM ने कर दिया बड़ा दावा

नई दिल्ली (एजेंसी)। महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस ने लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी पर निशाना साधा। उन्होंने रविवार को दावा किया कि कांग्रेस में उन्हें हटाने का माहौल बन रहा है, क्योंकि वह पार्टी को चुनाव में जीत नहीं दिला पा रहे हैं। फडणवीस ने यहां एक कार्यक्रम के दौरान पत्रकारों से कहा कि गांधी केवल अपने अस्तित्व के लिए लड़ रहे हैं और अपने नेतृत्व को लगातार मिल रही हार से बचाने की कोशिश कर रहे हैं।

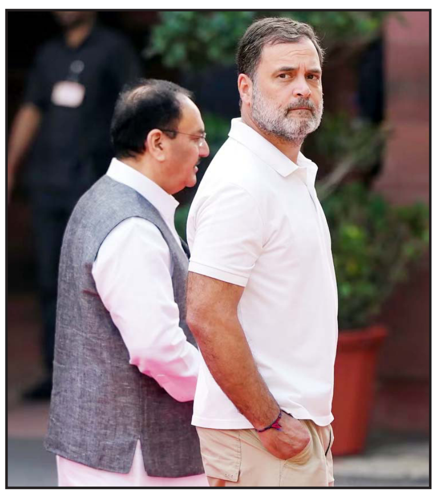

फडणवीस ने दावा किया, 'कांग्रेस में राहुल गांधी को हटाने का माहौल बन रहा है, क्योंकि वह पार्टी के लिए चुनावी जीत सुनिश्चित करने में असमर्थ हैं।' उन्होंने कहा कि गांधी ने अपनी पार्टी के भीतर जारी संघर्ष से ध्यान हटाने के लिए ऐसे बयान दिए हैं। राहुल ने आरोप लगाए थे कि भाजपा और राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ का उद्देश्य संविधान को खत्म करना है क्योंकि वे नहीं चाहते कि भारत में सभी को समान माना जाए। उन्होंने मंडी हाउस से 14 अप्रैल को भीमराव आंबेडकर की जयंती से पहले यहां 'रन फॉर आंबेडकर, रन फॉर कॉन्स्टीट्यूशन' मैराथन शुरू होने से पहले एकत्रित लोगों को संबोधित करते हुए कहा, 'आंबेडकर जी का मुख्य संदेश संविधान का था। संविधान के बिना जिसे हम भारत कहते हैं, वह नहीं होता।

उन्होंने कहा था, 'आज जो लोग आरएसएस-भाजपा की सोच के हैं, वे संविधान को खत्म करना चाहते हैं। वे कुछ भी कहें, उनका असली उद्देश्य संविधान को मिटाना है क्योंकि वे नहीं चाहते कि भारत में सभी को समान माना जाए।' उन्होंने कहा, 'वे (आरएसएस-भाजपा) चाहे जो करें, वे आंबेडकर जी की प्रतिमा के सामने सिर भी झुकाते हैं, लेकिन उनका उद्देश्य संविधान को खत्म करना है। हमारा उद्देश्य संविधान की रक्षा करना और उसे मजबूत करना है।'

पीएम मोदी से की थी बातचीत

शनिवार को समाज सुधारक ज्योतिराव फुले की स्मृति में आयोजित समारोह के दौरान प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और राहुल गांधी की मुलाकात हुई थी। यह बातचीत इसलिए खास है क्योंकि सार्वजनिक कार्यक्रमों में दोनों नेताओं को शिष्टाचार का आदान-प्रदान करने के अलावा शायद ही कभी एक-दूसरे से बात करते देखा जाता है। प्रधानमंत्री जब फुले की जयंती के अवसर पर उनकी प्रतिमा पर पुष्पांजलि अर्पित करने पहुंचे, तो लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष गांधी सहित कई गणमान्य व्यक्ति एक पंक्ति में खड़े थे। सभी का हाथ जोड़कर अभिवादन करने के बाद पीएम, गांधी के पास रुके और उनसे बातचीत करने लगे। हालांकि, यह तुरंत पता नहीं चल पाया कि एक मिनट की इस बातचीत के दौरान उन्होंने किस बारे में बात की।

इस्लाम छोड़ सनातन की राह पकड़ी; हरिद्वार में एक्स मुस्लिम यात्रा पर बवाल

हरिद्वार (एजेंसी)।

उत्तर प्रदेश के बिजनौर जिले से शुरू हुई पूर्व मुस्लिम सद्भावना पदयात्रा हरिद्वार की हरकी पैड़ी के ब्रह्मकुंड पर समाप्त हुई। इसमें शामिल दर्जनों लोगों ने मां गंगा को प्रणाम किया। पदयात्रा के दौरान सुरक्षा के मद्देनजर पुलिस तैनात रही। हालांकि इस दौरान श्री गंगा सभा ने कड़ी नाराजगी जताते हुए मुकदमे की चेतावनी दी। आरोप लगाया कि हरकी पैड़ी में गोल टोपी पहननकर पहुंचे थे।

हरकी पैड़ी पर यात्रा में शामिल मुस्लिम समुदाय के लोगों के पहुंचने का विरोध शुरू हो गया है। श्री गंगा सभा के अध्यक्ष नितिन गौतम और तीर्थ उज्जवल पंडित ने आरोप लगाया कि झूठी परमिशन लेकर नियमों के विपरीत मुस्लिमों को हरकी पैड़ी क्षेत्र में घुमाया गया। उन्होंने ऐसा करने वालों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई की मांग की। दूसरी ओर यात्रा में शामिल इमरोज आलम और अन्य लोगों का कहना है कि उन्होंने इस्लाम छोड़कर सनातन धर्म स्वीकार कर लिया है। वे अपनी 'घर वापसी' के बाद हर की पैड़ी पर गंगा पूजन करना चाहते हैं।

यात्रा का उद्देश्य यह है कि सनातन धर्म में आने के बाद उन पर कोई आंच न आए और न उन्हें प्रताड़ित किया जाए। पदयात्रा में संत रामविशाल दास महाराज समेत हिंदू संगठनों से जुड़े लोग और साधु-संत भी शामिल हुए। पदयात्रा 11 अप्रैल को बिजनौर गंगा बैराज से शुरू हुई थी। यह रविवार को हरकी पैड़ी पहुंची। इसका सोशल मीडिया पर वीडियो वायरल होते ही विरोध शुरू हो गया।

श्री गंगा सभा के अध्यक्ष नितिन गौतम ने कहा कि उन्हें बताया गया था कि यात्रा में केवल इस्लाम छोड़कर सनातन धर्म अपनाने वाले शामिल है। इस पर उन्होंने इस फैसले का स्वागत किया लेकिन वीडियो में हरकी पैड़ी पर कई लोग मुस्लिम टोपी लगाए दिख रहे हैं। इससे उन्हें आघात लगा है। हरकी पैड़ी क्षेत्र में बायलॉज के अनुसार मुस्लिम प्रवेश नहीं कर सकते। ऐसा करने वाले लोगों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई होनी चाहिए। उन्होंने रामविशाल दास महाराज को कांग्रेस का नेता बताते हुए उन पर सनातन को कलंकित करने का आरोप लगाया। तीर्थ पुरोहित उज्जवल पंडित ने कहा कि झूठ बोलकर एक संत ने प्रशासन और श्री गंगा सभा को भ्रमित किया। हरकी पैड़ी पर पहुंचे कई लोग मुस्लिम टोपी पहने हुए थे।

हमने नहीं छोड़ी बातचीत की टेबल, भारत में ईरान के प्रतिनिधि ने बताई होर्मुज खोलने की शर्त

नई दिल्ली (एजेंसी)। इस्लामाबाद में ईरान और अमेरिका के बीच वार्ता फेल होने के बाद दुनियाभर की अर्थव्यवस्थाओं में एक बार फिर खलबली मच गई है। अमेरिका के आक्रामक रुख को देखते हुए कहा जा सकता है कि दुनियाभर में तेल संकट की वजह से हाहाकार मच सकता है। अमेरिका ने ईरान को पोर्ट्स पर नाकेबंदी करने का फैसला कर लिया है। इसी बीच दिल्ली में ईरानी सुप्रीम लीडर के प्रतिनिधि डॉ. अब्दुल मजीद हकीम इलाही ने कहा कि यह मामला केवल अमेरिका के लिए नहीं बल्कि पूरी दनिया के लिए गंभीर है। होर्मुज को लेकर उन्होंने कहा, हम उसे खोलने को तैयार हैं लेकिन अभी स्थितियां ठीक नहीं हैं। कुछ जहाजों को यहां से गुजरने की इजाजत दी जा रही है।

डोनाल्ड ट्रंप के धमकी वाले बयान को लेकर उन्होंने कहा, दुनियाभर के जो भी देश या नेता शांति चाहते हैं, हमने सबसे बात करने की कोशिश कीहै। हमने कहा है कि वे सभी मिलकर आवाज उठाएं और इस युद्ध को रुकवाएं। उन्होंने कहा कि फारस की खाड़ी में अमेरिकी जहाज क्या कर रहे हैं? उन्हें वहां से निकल जाना चाहिए। उन्होंने कहा, हम अब भी बात करने को तैयार हैं लेकिन मानव मूल्यों, संप्रभुता और मूल अधिकारों को ध्यान में रखकर ही कोई बातचीत हो पाएगी। हमने कभी बातचीत की टेबल नहीं छोड़ी लेकिन उनकी मांगें ऐसी थीं जो कि मानी नहीं जा सकती थी।

ईरान पर रिश्वत लेने का आरोप

इस्लामाबाद में ईरान-अमेरिका वार्ता विफल होने के बाद ट्रंप ने रविवार को घोषणा की कि अमेरिका होर्मुज जलडमरूमध्य में प्रवेश करने और बाहर निकलने का प्रयास करने वाले सभी जहाजों की नाकाबंदी शुरू करेगा। उन्होंने अमेरिकी नौसेना को उन सभी जहाजों पर नज़र रखने और उन्हें रोकने का भी निर्देश दिया जो जलडमरूमध्य से गुजरने के लिए ईरान को रिश्वत देते हैं।

असम जातीय परिषद की सबसे युवा उम्मीदवार कुंकी चौधरी को असम पुलिस ने समन किया। इसके बाद वह थाने में हाजिर हुईं। एजेपी ने आरोप लगाया है कि चुनाव की वजह से हिमंत सरमा की सरकार उन्हें डराने की कोशिश कर रही है।

देश के अलग-अलग में तीन दिनों तक भारी बारिश का अनुमान

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारतीय मौसम विभाग ने देश के अलग-अलग हिस्सों के लिए दोहरा अलर्ट जारी किया है। पूर्वोत्तर के राज्यों में आसमानी बिजली और भारी बारिश का खतरा मंडरा रहा है, वहीं उत्तर और मध्य भारत के राज्यों में पारा तेजी से चढ़ने वाला है। सिक्किम में गरज के साथ भारी बारिश और बिजली कड़कने की संभावना है। अरुणाचल प्रदेश में 14, 15 और 18 अप्रैल को भारी बारिश का अनुमान है। असम और मेघालय में 17 और 18 अप्रैल को गरज-चमक के साथ तेज बारिश की चेतावनी दी गई है।

असल मुद्दा महिलाओं के लिए आरक्षण नहीं, बल्कि परिसीमन है: सोनिया गांधी

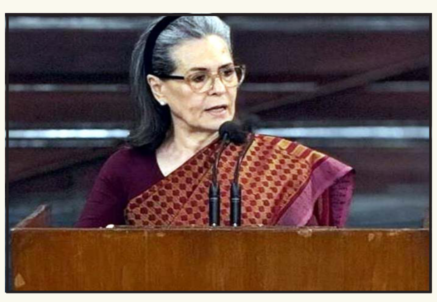

नई दिल्ली (एजेंसी)।

कांग्रेस संसदीय दल की अध्यक्ष सोनिया गांधी ने सोमवार को जोर देकर कहा कि इस सप्ताह संसद के विशेष सत्र में विधेयक लाने के सरकार के कदम को लेकर असली मुद्दा महिला आरक्षण नहीं, परिसीमन है। गांधी ने दावा किया कि यह ''परिसीमन प्रस्ताव अत्यंत खतरनाक'' है और ''संविधान पर भी हमला'' है। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि लोकसभा में सीटों की संख्या में वृद्धि करने वाले किसी भी परिसीमन को केवल गणितीय रूप से ही नहीं, बल्कि राजनीतिक रूप से भी न्यायसंगत होना चाहिए।

उन्होंने 'द हिंदू' में प्रकाशित एक लेख में यह आरोप भी लगाया कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की असल मंशा जाति आधारित जनगणना को और ''टालने तथा उसे पटरी से उतारने'' की है। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री मोदी विपक्षी दलों से उन विधेयकों का समर्थन करने की अपील कर रहे हैं, जिन्हें सरकार संसद के विशेष सत्र में जबरदस्ती पारित कराना चाहती है, जबकि उस समय तमिलनाडु और पश्चिम बंगाल में चुनाव प्रचार अपने चरम पर होगा। उन्होंने कहा, ''इस जल्दबाजी की केवल एक ही वजह हो सकती है और वह है राजनीतिक लाभ लेना तथा विपक्ष को रक्षात्मक स्थिति में डालना।''

गांधी ने दावा किया कि प्रधानमंत्री हमेशा की तरह पूरा सच नहीं बता रहे। उन्होंने कहा कि संसद ने सितंबर 2023 में विशेष सत्र के दौरान 'नारी शक्ति वंदन अधिनियम, 2023' सर्वसम्मति से पारित किया था और इस कानून के तहत संविधान में अनुच्छेद 334-ए जोड़ा गया, जिसमें लोकसभा और विधानसभाओं में महिलाओं के लिए एक-तिहाई आरक्षण का प्रावधान किया गया। उन्होंने कहा कि यह अगली जनगणना और जनगणना आधारित परिसीमन प्रक्रिया पूरी होने के बाद लागू होना था।

मोनालिसा फरमान को छोड़कर भाग गई? वायरल वीडियो से कहानी में नया मोड़

इंदौर (एजेंसी)। महाकुंभ से चर्चित हुई वायरल गर्ल मोनालिसा भोसले की कहानी में नया मोड़ आ गया है। फरमान खान से शादी के बाद शुरू हुए विवाद में नया ट्विस्ट आ गया है। फरमान पर रेप केस दर्ज होने के बाद उसका एक वीडियो वायरल हुआ है जिसमें वह मोनालिसा के भागने की बात कह रहा है। हालांकि, इस वायरल वीडियो की सत्यता की हम पुष्टि नहीं करते हैं।

फरमान का एक वीडियो सोशल मीडिया पर तेजी से वायरल हो रहा है जिसमें वह खुद के अजमेर (राजस्थान) में होने की जानकारी देते हुए कहता है कि वह मोनालिसा की तलाश कर रहा है। वीडियो में वह कहता है, 'हैलो फ्रेंड्स, मैं अजमेर-पुष्कर आया हुआ हूं, मोनालिसा भाग गई है, उसे ढूंढने अजमेर-पुष्कर आया हूं।' इंदौर की मोनालिसा से केरलम में शादी रचाने वाले फरमान ने यह नहीं बताया कि मोनालिसा कब से और कैसे लापता हो गई है।

फरमान के नए वीडियो से कई सवाल खड़े हो गए हैं। क्या सच में मोनालिसा भाग गई है? यदि यह सच है तो आखिर उसने यह कदम क्यों उठाया? क्या उसे किसी तरह बरगलाया गया था जिसका अहसास होने पर उसने यह कदम उठाया? या फिर फरमान ने अपने खिलाफ केस दर्ज होने के बाद कोई नई चाल चल दी है? मोनालिसा भोंसले को राष्ट्रीय अनुसूचित जनजाति आयोग (एनसीएसटी) की जांच में नाबालिग पाया गया है, जिसके बाद उसकी उम्र को लेकर उठा विवाद और गहरा गया है।

16 साल की निकली मोनालिसा, फरमान पर केस दर्ज

मोनालिसा के परिवार के सदस्यों और शिकायतकर्ता दुबे ने कहा कि आयोग द्वारा की गई जांच के अनुसार, महेश्वर सरकारी अस्पताल के रिकॉर्ड से पता चलता है कि उसकी जन्मतिथि 30 दिसंबर, 2009 है और इसका मतलब है कि शादी के समय उसकी उम्र 16 साल और दो महीने थी। लड़की के पिता की शिकायत पर पुलिस ने 25 मार्च को महेश्वर थाने में खान के खिलाफ कथित अपहरण और पॉक्सो अधिनियम और एससी/एसटी (अत्याचार निवारण) अधिनियम के तहत मामला दर्ज किया था।

सनोज मिश्रा बोले- फरमान भाग सकता है बांग्लादेश

इस बीच मोनालिसा को अभिनेत्री का रोल देकर फिल्म बनाने वाले डायरेक्टर सनोज मिश्रा ने फरमान के वीडियो को फर्जी करार देते हुए कहा कि इसका फायदा उठाकर फरमान विदेश भाग सकता है। उन्होंने कहा कि वह नेपाल के रास्ते बांग्लादेश भाग सकता है। सनोज मिश्रा ने कहा, 'वीडियो बहुत वायरल हो रहा है, जिसमें जिहादी वायरल गर्ल को ढूंढ रहा है अजमेर में। वह फेक वीडियो है, इस ध्यान देने की जरूरत नहीं है। ध्यान इस पर देने की जरूरत है कि इसका फायदा उठाकर वह नेपाल के रास्ते बांग्लादेश भाग सकता है।'

हंगरी में 16 साल बाद सत्ता से बाहर हुए ओर्बन

हंगरी (एजेंसी)।

हंगरी के चुनावी नतीजों ने पूरी दुनिया को चौंका दिया है। पिछले 16 वर्षों से प्रधानमंत्री की कुर्सी पर काबिज विक्टर ओर्बन को जनता ने सत्ता से बेदखल कर दिया है। उनकी जगह अब यूरोपीय संघ के समर्थक पीटर मैग्यार देश की कमान संभालेंगे। मैग्यार की इस जीत को 'धुर दक्षिणपंथी' राजनीति के खिलाफ एक बड़े जनादेश के रूप में देखा जा रहा है।

अब तक हुई 77 प्रतिशत मतों की गिनती में पीटर मैग्यार की 'तिस्जा पार्टी' को 53 प्रतिशत से अधिक वोट मिले हैं। वहीं, ओर्बन की सत्तारूढ़ 'फिदेस्ज पार्टी' मात्र 38 प्रतिशत वोटों पर सिमट गई है। ओर्बन ने अपनी हार स्वीकार कर ली है जिसे उनके राजनीतिक करियर का सबसे बड़ा झटका माना जा रहा है।

3 जुलाई को शुरू होगी अमरनाथ यात्रा, 57 दिन चलेगी

जम्मू (एजेंसी)। उप-राज्यपाल मनोज सिन्हा ने अमरनाथ यात्रा की आधिकारिक घोषणा करते हुए बताया कि इस वर्ष अमरनाथ यात्रा 3 जुलाई को शुरू होगी और रक्षा बंधन के दिन 28 अगस्त को समाप्त होगी। यात्रा कुल 57 दिनों तक चलेगी। जम्मू के लोक भवन में संवाददाता सम्मेलन में उप-राज्यपाल ने यात्रा का संपूर्ण विवरण देते हुए कहा कि भगवान शिव का आशीर्वाद पाने के लिए 'प्रथम पूजा' ज्येष्ठ पूर्णिमा 29 जून को आयोजित की जाएगी। यात्रा के लिए अग्रिम पंजीकरण 15 अप्रैल से ऑफलाइन और ऑनलाइन दोनों तरीकों से शुरू होगा।

पंजीकरण की सुविधा देश भर में जे. एंड के. बैंक, पंजाब नैशनल बैंक, भारतीय स्टेट बैंक और येस बैंक की 554 शाखाओं में उपलब्ध होगी। उप-राज्यपाल ने बताया कि प्रत्येक पंजीकृत तीर्थयात्री और सेवा प्रदाता को 'रेडियो फ्रीक्वैंसी आइडैंटिफिकेशन डिवाइस (आर. एफ.आई.डी.) जारी की जाएगी। पंजीकृत तीर्थयात्रियों को 'ग्रुप एक्सीडैंट इंश्योरैंस' मिलेगा जिसकी बीमित राशि बढ़ाकर 10 लाख रुपए प्रति व्यक्ति कर दी गई है। इसी तरह पौनी (टट्टुओं) की आकस्मिक और प्राकृतिक दोनों प्रकार की मृत्यु के लिए प्रति पशु 50,000 रुपए राष्ट्रीय पशुधन मिशन के माध्यम से प्रदान किए जाएंगे।

उप-राज्यपाल ने कहा कि बालटाल एक्सिस पर पवित्र गुफा तक और पवित्र गुफा से पंजतरणी तक ग्रिड बिजली की सप्लाई उपलब्ध होगी। यात्रा के रास्ते अच्छी तरह से रोशन होंगे। तीर्थयात्रियों की यात्रा को आसान बनाने के लिए उन्हें कई तरह की ई-सेवाएं और पौनी, पिट्ठू, पालकी वगैरह किराए पर लेने के लिए एक प्री-पेड सिस्टम उपलब्ध होगा। बालटाल पंथा चौक (श्रीनगर), नुनवान और चंद्रकोट में यात्री निवास की हाईटैक सुविधाएं उपलब्ध होंगी।

पीएम किसान : फेस दिखाओ और पैसा पाओ!

नई दिल्ली (एजेंसी)। प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि योजना के लाभार्थियों के लिए सरकार ने सख्त दिशा-निर्देश जारी किए हैं। अगर आप 23वीं किस्त का इंतजार कर रहे हैं तो अब केवल आधार लिंक होना काफी नहीं है। सरकार ने पारदर्शिता बढ़ाने के लिए e-KYC और डिजिटल किसान आईडी को अनिवार्य कर दिया है। इन नियमों की अनदेखी करने पर आपकी अगली किस्त अटक सकती है।

अब किसानों को ओटीपी या फिंगरप्रिंट के लिए परेशान होने की जरूरत नहीं है। सरकार ने PM Kisan Mobile App में 'फेस ऑथेंटिकेशन' फीचर जोड़ दिया है। किसान अपने मोबाइल पर ऐप डाउनलोड कर घर बैठे ही अपना चेहरा स्कैन करके e-KYC पूरी कर सकते हैं। बुजुर्ग किसानों को अब फिंगरप्रिंट मैच न होने जैसी समस्याओं से छुटकारा मिलेगा।

दो स्कूल बसों की भीषण भिड़ंत : 12 से ज्यादा बच्चे घायल, मची चीख-पुकार

ग्रेटर नोएडा (एजेंसी)।

ग्रेटर नोएडा के दादरी थाना क्षेत्र के रूपवास गांव के पास सुबह एक बड़ा सड़क हादसा हो गया। तेज रफ्तार का कहर दो स्कूल बसों पर टूटा जिससे चीख-पुकार मच गई। इस टक्कर में एक दर्जन से अधिक स्कूली बच्चे घायल हो गए हैं जबकि एक बस चालक जिंदगी और मौत के बीच जंग लड़ रहा है।

यह घटना सुबह करीब 7:00 बजे आमका रोड पर हुई। चश्मदीदों के मुताबिक रामाज्ञा स्कूल की एक तेज रफ्तार बस के चालक ने अपना नियंत्रण खो दिया और सामने से आ रही जीसस मैरी स्कूल की बस को जोरदार टक्कर मार दी। टक्कर इतनी भयानक थी कि दोनों बसों के अगले हिस्से के परखच्चे उड़ गए। हादसे के वक्त जीसस मैरी स्कूल की बस में लगभग 25 बच्चे सवार थे जबकि दूसरी बस खाली बताई जा रही है।

हादसे के तुरंत बाद स्थानीय लोग मदद के लिए दौड़े और पुलिस को सूचना दी। घायल बच्चों को तुरंत नजदीकी अस्पताल ले जाया गया। डॉक्टरों के अनुसार अधिकांश बच्चों को मामूली चोटें आई हैं लेकिन कुछ के सिर में चोट लगने के कारण उन्हें डॉक्टरों की कड़ी निगरानी में रखा गया है। स्कूल बस का चालक बस के केबिन में बुरी तरह फंस गया था जिसे पुलिस और स्थानीय लोगों ने कड़ी मशक्कत के बाद बाहर निकाला। उसके सिर में गंभीर चोट आई है और फिलहाल वह ICU में भर्ती है।

जैसे ही हादसे की खबर फैली बच्चों के माता-पिता घबराए हुए अस्पताल की ओर भागे। अस्पताल में शौर्य नगर, अभिषेक शुक्ला, प्रज्ञा, जानवी और पीहू समेत कई बच्चों के परिजन अपनी संतानों की कुशलता जानने के लिए व्याकुल दिखे। परिजनों ने स्कूल प्रबंधन और ड्राइवरों की लापरवाही पर गंभीर सवाल उठाए हैं।

पुलिस की कार्रवाई

एडिशनल डीसीपी (ग्रेटर नोएडा) सुधीर कुमार ने बताया कि घायल बच्चों का इलाज चल रहा है। पुलिस ने दोनों बसों को कब्जे में ले लिया है। घटना के बाद रामाज्ञा स्कूल की बस का ड्राइवर मौके से फरार हो गया है जिसकी तलाश के लिए पुलिस टीमें छापेमारी कर रही हैं।

ना बल्लेबाज चल पाए, ना गेंदबाज! आर अश्विन ने हार्दिक पंड्या पर फाड़ दिया पूरा बिल, कहा- बचकानी गलती ने हरवा दिया

मुंबई (एजेंसी)। आईपीएल 2026 के हाई-वोल्टेज मुकाबले में मुंबई इंडियंस को रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु के हाथों मिली 18 रनों की हार के बाद हार्दिक पंड्या की कप्तानी एक बार फिर सवालों के घेरे में है। दिग्गज भारतीय स्पिनर रविचंद्रन अश्विन ने हार्दिक के नेतृत्व और रणनीतिक फैसलों की कड़ी आलोचना की है। अश्विन ने विशेष रूप से रजत पाटीदार के खिलाफ मयंक मार्कंडेय को गेंदबाजी पर लगाने के फैसले को बचकानी गलती करार दिया जिसने मैच का रुख पूरी तरह से पलट दिया।

आर अश्विन ने अपने यूट्यूब चैनल पर साल 2024 के एक पुराने मैच का हवाला देते हुए हार्दिक की कप्तानी पर निशाना साधा। उन्होंने याद दिलाया कि कैसे पाटीदार ने पहले भी मार्कंडेय की बखिया उधेड़ी थी। अश्विन ने कहा, 'रजत पाटीदार स्पिनरों के खिलाफ एक मॉन्स्टर हिटर हैं। जब वह बल्लेबाजी करने आए तो आपने तुरंत मार्कंडेय को गेंद थमा दी? यह कोई समझदारी भरा फैसला नहीं था। यह बहुत ही औसत दर्जे की कप्तानी है।'

अश्विन ने आंकड़ों के जरिए समझाया कि 2024 में सनराइजर्स हैदराबाद के खिलाफ भी पाटीदार ने मार्कंडेय के एक ओवर में चार छक्के जड़े थे और रविवार को भी कहानी लगभग वैसी ही रही। उन्होंने आगे कहा, 'यह समझना बहुत जरूरी है कि मार्कंडेय के दिमाग में क्या चल रहा होगा। पाटीदार ने हैदराबाद में उन्हें मार-मारकर धोया था और यहां भी उन्होंने पहली ही गेंद से उन पर प्रहार करना शुरू कर दिया।' आर अश्विन ने बताया कि वानखेड़े की पिच स्पिनरों के अनुकूल नहीं थी लेकिन गलत रणनीति ने स्थिति को और बिगाड़ दिया। मयंक मार्कंडेय ने महज 2 ओवरों में 40 रन लुटा दिए जबकि मिचेल सैंटनर ने भी 43 रन दिए। अश्विन का मानना है कि मुंबई के गेंदबाजों ने पाटीदार को क्रीज पर सेट होने का पूरा मौका दिया जिसका फायदा उठाकर उन्होंने सिर्फ 17 गेंदों में अर्धशतक ठोक दिया और आरसीबी का स्कोर 240 तक पहुंचा दिया। हार्दिक की कप्तानी पर अश्विन का यह हमला नया नहीं है। आईपीएल 2026 शुरू होने से पहले ही अश्विन ने सुझाव दिया था कि मुंबई इंडियंस की कमान सूर्यकुमार यादव के हाथों में होनी चाहिए। अश्विन के अनुसार, बड़े मैचों में सही समय पर सही गेंदबाज का चुनाव करना ही एक कप्तान की असली परीक्षा होती है जिसमें हार्दिक पूरी तरह विफल रहे।

पीएसएल में बैठे-बैठे कर दी आईपीएल की तारीफ, विदेशी कोच ने कर दिया साफ, इस बयान से चिढ़ जाएगा पाकिस्तान

नई दिल्ली (एजेंसी)। पीएसएल और आईपीएल की तुलना अक्सर होती रहती है। हालांकि ये चर्चा किसी मजाक से कम नहीं क्योंकि पाकिस्तान की लीग आईपीएल के सामने कहीं नहीं टिकती जो लंबे समय से भारत ही नहीं बल्कि पूरी दुनिया की नंबर एक लीग है। इस बार चर्चा का केंद्र बने इस्लामाबाद यूनाइटेड के सहायक कोच जैकब ओरम , जो एक प्रेस कॉन्फ्रेंस के दौरान आईपीएल को फिल्म बताने वाले बयान पर अपनी हंसी नहीं रोक पाए।

दरअसल हाल ही में दक्षिण अफ्रीकी बल्लेबाज राइली रूसो ने आईपीएल को क्रिकेट से ज्यादा एक मूवी करार दिया था जिस पर जब ओरम से राय मांगी गई, तो उन्होंने मजाकिया अंदाज में पूछा, 'क्या आपने इसे फिल्म की तरह कहा?' आईपीएल और पीएसएल के बीच के अंतर को स्पष्ट करते हुए ओरम ने कहा कि दोनों लीग अपनी-अपनी जगह अलग हैं। ओरम का मानना है कि आईपीएल की लीग बहुत बड़ी है। उन्होंने आईपीएल के विशालकाय स्वरूप को स्वीकार करते हुए कहा, 'ये दोनों टूर्नामेंट समान हैं, लेकिन फिर भी बहुत अलग हैं। आईपीएल, पीएसएल की तुलना में दोगुना लंबा चलता है। मैंने आईपीएल में कोचिंग नहीं की है लेकिन लंबे समय पहले वहां खेला जरूर हूं। अब यह लीग एक विशालकाय रूप ले चुकी है।' प्रेस कॉन्फ्रेंस में उस बयान का भी जिक्र हुआ जिसमें राइली रूसो ने आईपीएल को बॉलीवुड से प्रभावित बताया था। रूसो के अनुसार, पीएसएल एक छोटा और ज्यादा कड़ा मुकाबला देने वाला टूर्नामेंट है जबकि आईपीएल में क्रिकेट से ज्यादा चकाचौंध है। पीएसएल 2026 इस समय तेल की बढ़ती कीमतों और आर्थिक संकट के कारण केवल दो शहरों में बिना दर्शकों के खेला जा रहा है। वहीं आईपीएल में हर मैच में मैदान में दर्शकों की भारी भीड़ देखने को मिलती है।

टिम डेविड ने वानखेड़े में खड़ा किया बड़ा ड्रामा, गेंद लेकर उछालते रहे, अंपायर बुरी तरह गुस्से में आए

मुंबई (एजेंसी)। वानखेड़े स्टेडियम में मुंबई इंडियंस और रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु के बीच मुकाबला केवल रनों की बरसात के लिए नहीं बल्कि मैदान पर हुई एक अजीबोगरीब घटना के लिए भी चर्चा में रहा। मैच के दौरान आरसीबी के बल्लेबाज टिम डेविड ने कुछ ऐसा किया कि मैदानी अंपायर उनसे काफी खफा नजर आए। अब बड़ा सवाल यह है कि टिम डेविड की इस हरकत के लिए उनके ऊपर बीसीसीआई जुर्माना लगाता है या फिर नहीं।

यह वाकया बेंगलुरु की पारी के 18वें ओवर में हुआ जब डेविड ने हार्दिक पंड्या की गेंद पर एक गगनचुंबी छक्का जड़ा और गेंद गुम हो गई। जब अंपायरों ने नई गेंद मंगवाई तो टिम डेविड ने नियमों को ताक पर रखकर खुद ही गेंद की जांच शुरू कर दी। उन्होंने गेंद हाथ में ली और उसे परखने लगे जबकि अंपायर लगातार उनसे गेंद वापस मांग रहे थे। डेविड की इस हरकत ने अंपायरों को बुरी तरह चिढ़ा दिया। कमेंट्री कर रहे पूर्व क्रिकेटर आकाश चोपड़ा ने भी इस पर नाराजगी जाहिर करते हुए कहा, 'एक बल्लेबाज के तौर पर आपको ऐसा करने की इजाजत बिल्कुल नहीं है। आप गेंद चेक नहीं कर सकते। अगर गेंद का शेप बिगड़ा है तो वह इसलिए क्योंकि आपने ही उस पर छक्का मारा है।'

आरसीबी ने मुंबई को हराया : मैच की बात करें तो आरसीबी ने इस मुकाबले में मुंबई को 18 रनों से शिकस्त देकर पॉइंट्स टेबल में तीसरा स्थान कब्जा लिया है। विराट कोहली, फिल साल्ट और रजत पाटीदार के अर्धशतकों की मदद से बेंगलुरु ने विशाल स्कोर खड़ा किया था।

जवाब में मुंबई इंडियंस की टीम 222 रन ही बना सकी। हालांकि अंत में शेरफेन रदरफोर्ड ने 31 गेंदों में 71 रनों की तूफानी पारी खेलकर उम्मीद जगाई थी लेकिन तब तक मैच मुंबई के हाथों से फिसल चुका था।

आईपीएल इतिहास के 5 सबसे बेस्ट रिप्लेसमेंट खिलाड़ी, एक ने तो अपनी कप्तानी में जिता दी ट्रॉफी

नई दिल्ली (एजेंसी)।

आईपीएल की नीलामी में अनसोल्ड रह जाना किसी भी खिलाड़ी के लिए निराशाजनक होता है लेकिन किस्मत का पहिया कब घूम जाए कोई नहीं जानता। आईपीएल इतिहास में ऐसे कई खिलाड़ी रहे हैं जो शुरू में किसी ने नहीं खरीदे लेकिन चोटिल खिलाड़ियों की जगह रिप्लेसमेंट के तौर पर आए और अपनी टीम की किस्मत ही बदल दी।

आईपीएल इतिहास का सबसे सफल रिप्लेसमेंट शायद क्रिस गेल ही हैं। 2011 की नीलामी में गेल को किसी ने नहीं खरीदा था। लेकिन जब आरसीबी के तेज गेंदबाज डर्क नैनेस चोटिल हुए तो टीम ने गेल को बुलाया।

इसके बाद जो हुआ वो इतिहास है। गेल ने उस सीजन में रनों का अंबार लगा दिया और आरसीबी के लिए एक ऐसे बल्लेबाज साबित हुए जिसने अकेले दम पर मैच जिताने की परिभाषा बदल दी।

रजत पाटीदार को 2022 की मेगा नीलामी में किसी टीम ने घास नहीं डाली थी। वे अपनी शादी की तैयारियों में व्यस्त थे तभी आरसीबी के लवनीथ सिसोदिया चोटिल हो गए और पाटीदार की रिप्लेसमेंट के तौर पर एंट्री हुई। पाटीदार ने एलिमिनेटर मैच में लखनऊ के खिलाफ नाबाद शतक जड़कर तहलका मचा दिया। बाद में इस खिलाड़ी ने साल 2025 में आरसीबी की टीम को 18 साल के बाद पहली बार चैंपियन बना दिया। दक्षिण अफ्रीका के दिग्गज स्पिनर इमरान ताहिर 2017 की नीलामी में अनसोल्ड रहे थे। जब मिचेल मार्श चोटिल होकर बाहर हुए तो पुणे की टीम ने ताहिर को मौका दिया। ताहिर ने अपनी जादुई स्पिन से उस सीजन में 18 विकेट चटकाए और पुणे को फाइनल तक ले जाने में बड़ी भूमिका निभाई। उनकी वो विकेट लेने के बाद वाली दौड़ आज भी फैंस के जहन में ताजा है।

मलिंगा की कहानी थोड़ी अलग है। 2018 में वे मुंबई इंडियंस के मेंटॉर बन गए थे लेकिन 2019 में वे बतौर खिलाड़ी वापस आए। हालांकि वे नीलामी का हिस्सा थे पर उनकी वापसी एक तरह से टीम के कॉम्बिनेशन को भरने के लिए थी। 2019 के फाइनल की आखिरी गेंद पर शार्दुल ठाकुर को आउट कर मुंबई को चौथी बार चैंपियन बनाना उनके मैच विनर होने का सबसे बड़ा सबूत था।

आईपीएल 2024 की नीलामी में इंग्लैंड के विस्फोटक ओपनर फिल साल्ट को किसी ने नहीं खरीदा था। जब जेसन रॉय ने अपना नाम वापस लिया तो केकेआर ने साल्ट को रिप्लेसमेंट के तौर पर जोड़ा। साल्ट ने सुनील नरेन के साथ मिलकर ऐसी तूफानी शुरुआत दी कि केकेआर ने उस सीजन का खिताब अपने नाम किया।

रात 8 बजे क्लाइंट का मैसेज इग्नोर करने पर भड़का बॉस

मुंबई (एजेंसी)। आज के समय में 'जेन-जी' युवा सिर्फ ऑफिस में बैठकर काम ही नहीं करते, बल्कि अपने बॉस को उसी के बनाए नियमों से सबक सिखाना भी बखूबी जानते हैं। अक्सर कंपनियों में उम्मीद की जाती है कि कर्मचारी ऑफिस के बाद भी काम के लिए उपलब्ध रहें, लेकिन एक युवा ने कंपनी के नियमों का ऐसा अक्षरशः पालन किया कि पूरे मैनेजमेंट का सिस्टम ही सवालों के घेरे में आ गया। सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म 'एक्स' पर मुंबई के चार्टर्ड अकाउंटेंट पारस गंगवाल द्वारा शेयर किया गया यह मजेदार किस्सा अब तेजी से वायरल हो रहा है।

एक्स पर शेयर की गई पोस्ट के मुताबिक, रोहित नाम के एक जेन-जी कर्मचारी ने हाल ही में एक नई कंपनी में नौकरी शुरू की थी। जॉइनिंग के पहले ही दिन मैनेजमेंट ने एक सख्त फरमान सुनाते हुए साफ कर दिया था कि किसी भी परिस्थिति में किसी भी कर्मचारी को 'वर्क फ्रॉम होम' (घर से काम) नहीं मिलेगा। रोहित ने इस आदेश पर न तो कोई बहस की और न ही कोई विरोध दर्ज कराया। वह हर दिन बिल्कुल समय पर ऑफिस आता, पूरी ईमानदारी से अपना काम खत्म करता और शिफ्ट पूरी होते ही बिना कोई सवाल किए अपना सिस्टम लॉग ऑफ करके घर चला जाता। सब कुछ बिल्कुल शांति और नियमों के हिसाब से चल रहा था, लेकिन एक रात कुछ ऐसा हुआ जिसने ऑफिस के नियमों की ही पोल खोल दी। ऑफिस के नियमों में असल पेंच तब फंसा जब एक शाम करीब 8 बजे रोहित को एक जरूरी क्लाइंट का मैसेज आया। चूंकि शिफ्ट खत्म हो चुकी थी, इसलिए रोहित ने उस मैसेज का जवाब न देने का विकल्प चुना।

मोदी सरकार का बड़ा फैसला, डीजल पर निर्यात शुल्क बढ़कर किए 55.5 रुपए प्रति लीटर

नई दिल्ली (एजेंसी)। सरकार ने डीजल और एविएशन टर्बाइन फ्यूल (एटीएफ) पर एक्सपोर्ट ड्यूटी में बड़ा इजाफा कर दिया है। डीजल पर निर्यात शुल्क 21.5 रुपए प्रति लीटर से बढ़ाकर 55.5 रुपए प्रति लीटर कर दिया गया है, जबकि एटीएफ पर यह शुल्क 29.5 रुपए से बढ़ाकर 42 रुपए प्रति लीटर कर दिया गया है। हालांकि, पेट्रोल पर कोई बदलाव नहीं किया गया है और इसकी एक्सपोर्ट ड्यूटी अभी भी शून्य बनी हुई है।

सरकार का यह कदम वैश्विक ऊर्जा कीमतों में जारी उतार-चढ़ाव के बीच घरेलू बाजार में ईंधन की उपलब्धता सुनिश्चित करने के उद्देश्य से उठाया गया है। सरकार के आधिकारिक बयान के अनुसार, इस फैसले का उद्देश्य राजस्व बढ़ाना नहीं है, बल्कि यह सुनिश्चित करना है कि निर्यातक अंतरराष्ट्रीय और घरेलू कीमतों के अंतर का अनुचित फायदा न उठा सकें।

यह निर्णय विंडफॉल टैक्स फ्रेमवर्क का हिस्सा है, जिसके तहत सरकार समय-समय पर ईंधन निर्यात पर टैक्स में बदलाव करती रहती है, ताकि रिफाइनरियों के मुनाफे और घरेलू जरूरतों के बीच संतुलन बना रहे। साथ ही, सरकार एटीएफ पर राज्यों द्वारा लगाए जाने वाले वैट को कम करने के विकल्प पर भी विचार कर रही है। इस दिशा में नागर विमानन मंत्रालय अन्य विभागों और राज्य सरकारों के साथ बातचीत कर रहा है। महाराष्ट्र और दिल्ली जैसे राज्यों में ऊंचे टैक्स के कारण मेट्रो एयरपोर्ट्स पर एटीएफ की कीमतें ज्यादा बनी हुई हैं। ऐसे में सरकार एयरपोर्ट से जुड़े कुछ शुल्कों में कमी लाने की संभावनाओं पर भी विचार कर रही है और इसको लेकर एयरपोर्ट ऑपरेटर्स के साथ चर्चा की योजना है।

गौरतलब है कि पश्चिम एशिया में जारी संघर्ष के कारण ईंधन कीमतों में तेजी आई है, जिसके चलते 26 मार्च को सरकार ने डीजल और एटीएफ पर पहले ही एक्सपोर्ट ड्यूटी लागू की थी। यह कदम घरेलू सप्लाई बढ़ाने और निर्यातकों को ज्यादा लाभ लेने से रोकने के लिए उठाया गया था, क्योंकि युद्ध की शुरुआत के बाद से वैश्विक कच्चे तेल की कीमतों में लगातार बढ़ोतरी देखी गई है। 28 फरवरी को अमेरिका और इजरायल द्वारा ईरान पर किए गए हमलों के बाद स्थिति और बिगड़ी, जिससे वैश्विक ऊर्जा बाजार प्रभावित हुआ। हालांकि बीते 8 अप्रैल को ईरान और अमेरिका के बीच दो सप्ताह के युद्धविराम पर सहमति बनी, जिससे बाजार को कुछ राहत मिली। हालांकि इस पर अभी संशय बना हुआ है। इसके बावजूद सरकार ने घरेलू जरूरतों को प्राथमिकता देते हुए डीजल और एटीएफ पर एक्सपोर्ट ड्यूटी बढ़ाने का फैसला किया है।

आरसीबी की जीत पर विजय माल्या की खुशी का ठिकाना नहीं, कहा- खिलाड़ियों ने मुंबई में दहाड़ मारी

मुंबई (एजेंसी)। आईपीएल 2026 के एक और रोमांचक मुकाबले में आरसीबी की टीम ने जीत हासिल की। आरसीबी ने घर में घुसकर मुंबई की टीम को वानखेड़े स्टेडियम में 18 रन से हरा दिया। मुंबई इंडियंस आरसीबी की इस धमाकेदार जीत ने टीम के पूर्व मालिक विजय माल्या को भी गदगद कर दिया है। माल्या ने सोशल मीडिया पर इस जीत का जश्न मनाते हुए टीम की जमकर तारीफ की। माल्या इस पूरे ही सीजन में अबतक आरसीबी के मैचों के बाद प्रतिक्रिया देते हुए नजर आए हैं।

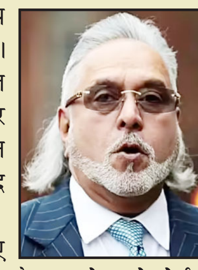

विजय माल्या ने ट्वीट करते हुए आरसीबी के खिलाड़ियों को इस जीत के बाद शेर कहा है। उन्होंने आरसीबी की इस जीत पर खुशी जाहिर करते हुए लिखा, ' RCB नम्मा सिम्हागलु (हमारे शेर)। बेंगलुरु के इन शेरों ने आज मुंबई के घर में बल्ले और गेंद दोनों से अपनी दहाड़ सुनाई है और एक शानदार जीत दर्ज की है।' भारत छोड़ चुके और फिलहाल इंग्लैंड में रह रहे विजय माल्या भले ही कानूनी पचड़ों में फंसे हों लेकिन आरसीबी के प्रति उनका लगाव कम नहीं हुआ है। लोन डिफॉल्ट और मनी लॉन्ड्रिंग के आरोपों के चलते साल 2019 में उन्हें भगोड़ा घोषित किया गया था। इन तमाम विवादों और भारत से दूर होने के बावजूद माल्या अक्सर आरसीबी के बड़े मुकाबलों पर अपनी प्रतिक्रिया देते रहते हैं।

मैच की बात करें तो बेंगलुरु ने वानखेड़े की पिच पर शुरू से ही अपना दबदबा बनाए रखा। फिल साल्ट ने पावरप्ले में ही मुंबई के गेंदबाजों की बखिया उधेड़ते हुए टीम को तूफानी शुरुआत दी। इसके बाद रन मशीन विराट कोहली ने एक सधी हुई अर्धशतकीय पारी खेलकर पारी को स्थिरता दी। अंत में रजत पाटीदार की आतिशी बल्लेबाजी ने स्कोर को रॉकेट की रफ्तार दी जिसकी बदौलत आरसीबी ने बोर्ड पर 240 रनों का पहाड़ जैसा स्कोर खड़ा कर दिया। लक्ष्य का पीछा करने उतरी मुंबई को आरसीबी के गेंदबाजों ने कभी खुलकर खेलने का मौका नहीं दिया। सुयश शर्मा ने बीच के ओवरों में मुंबई के सेट बल्लेबाजों को पवेलियन भेजकर मैच का रुख पूरी तरह पलट दिया। वहीं, क्रुणाल पंड्या ने अपनी कसी हुई गेंदबाजी से रनों की रफ्तार पर लगाम लगाए रखी। हालांकि, अंत में शेरफेन रदरफोर्ड ने 71 रनों की तूफानी पारी खेलकर हार के अंतर को कम करने की कोशिश जरूर की लेकिन बेंगलुरु की जीत अब पक्की हो चुकी थी।

रजत पाटीदार की हुई गेल, कोहली के साथ टॉप-5 में एंट्री

मुंबई (एजेंसी)। डिफेंडिंग चैंपियन आरसीबी का आईपीएल 2026 में अच्छा हो रहा है और ये टीम खिताब को डिफेंड करने के लिए तत्पर नजर आ रही है। आरीसीबी ने इस सीजन के अपने चौथे मैच में मुंबई को 18 रन से हरा दिया और शानदार वापसी की। इससे पहले आरसीबी को राजस्थान के हाथों हार मिली थी। मुंबई के खिलाफ मैच में रजत पाटीदार ने गजब की पारी खेली और 20 गेंदों पर 53 रन ठोक दिए।

रजत पाटीदार मुंबई के खिलाफ खेली अपनी 53 रन की पारी के दम पर आईपीएल में आरसीबी के लिए सबसे ज्यादा रन बनाने वाले बल्लेबाजों की लिस्ट में टॉप 5 में आ गए। रजत पाटीदार ने जैक कैलिस को पीछे छोड़ दिया और 5वें नंबर पर आ गए। रजत ने इस टीम के लिए अब तक कुल 1306 रन बनाए हैं जबकि जैक कैलिस जो अब छठे नंबर पर आ गए उन्होंने इस टीम के लिए 1271 रन बनाए थे।

आरसीबी के लिए इस लीग में सबसे ज्यादा रन बनाने वाले बल्लेबाजों की लिस्ट में पहले नंबहर पर विराट कोहली हैं जिन्होंने कुल 9264 रन बनाए हैं जबकि दूसरे नंबर पर एबी डिविलियर्स हैं जिन्होंने 4522 रन बनाए थे। तीसरे स्थान पर क्रिस गेल हैं जिन्होंने इस टीम के लिए कुल 3420 रन बनाए थे जबकि चौथे स्थान पर फॉफ डुप्लेसिस हैं जिन्होंने 1636 रन बनाए थे। इस लिस्ट में सातवें नंबर पर ग्लेन मैक्सवेल मौजूद हैं जिन्होंने आरसीबी के लिए आईपीएल में कुल 1266 रन बनाए थे जबकि तूफानी बल्लेबाज देवदत्त पडीक्कल 1256 रन के साथ 8वें स्थान पर मौजूद हैं।

वैभव ने बुमराह, शार्दुल, इशांत के खिलाफ हैरान करने वाले स्ट्राइक रेट से बनाए हैं रन, अश्विन-रबाडा के खिलाफ नहीं चला है बल्ला

नई दिल्ली (एजेंसी)। वैभव सूर्यवंशी क्या कमाल की बैटिंग आईपीएल 2026 में कर रहे हैं और अपनी टीम के लिए जमकर रन बना रहे हैं। उन्होंने इस सीजन में बुमराह, जोस हेजवुड, भुवनेश्वर कुमार जैसे गेंदबाजों की भी खूब पिटाई की है, लेकिन इस लीग में कुछ बॉलर्स ऐसे हैं जिन्होंने उनके बल्ले पर लगाम लगाने का कमाल किया है।

वैभव का आईपीएल में ये दूसरा सीजन हैं और साल 2025 में वो राजस्थान के साथ जुड़े थे। इन दो सीजन में अब तक वैभव ने ज्यादातर गेंदबाजों को अपना निशाना बनाया है और उनकी गेंदों पर खूब रन बनाए हैं जिसमें भारतीय गेंदबाजों के साथ-साथ विदेशी बॉलर्स भी शामिल हैं, लेकिन आर अश्विन, प्रसिद्ध कृष्णा, कगिसो रबादा, राशिद खान जैसे गेंदबाजों के खिलाफ वो रन बनाने में कामयाब नहीं रहे हैं।

वैभव ने आईपीएल के पिछले दो सीजन में अब तक खेले मैचों में किन-किन गेंदबाजों के खिलाफ सबसे ज्यादा की स्ट्राइक रेट से रन बनाए हैं और किनके खिलाफ उनका स्ट्राइक रेट काफी कम रहा है और उन्होंने संघर्ष किया है। वैभव ने इस लीग में करीम जनत के खिलाफ 500.00 की स्ट्राइक रेट से रन बनाए थे तो वहीं उन्होंने इशांत शर्मा को भी अपना निशाना बनाया था और उनके खिलाफ 385.7 की स्ट्राइक रेट से रन बनाए थे। इसके अलावा वैभव ने नूर अहमद, रविंद्र जडेजा, शार्दुल ठाकुर, अर्शदीप सिंह, जसप्रीत बुमराह जैसे गेंदबाजों के खिलाफ भी 250 की स्ट्राइक रेट से रन बनाए हैं।

आईपीएल में कुछ बॉलर्स ऐसे ही हैं जो वैभव को बल्ले को रोक पाने में सफल रहे हैं। आईपीएल 2025 में वैभव ने अश्विन की 8 गेंदों का सामना किया था जिस पर उन्होंने सिर्फ 5 रन बनाए थे और उनका स्ट्राइक रेट 62.5 का था। प्रसिद्ध कृष्णा की गेंद पर भी वैभव का बल्ला नहीं चला है और उनकी 8 गेंदों पर उन्होंने 100.0 की स्ट्राइक रेट के साथ 8 रन ही बनाए हैं जबकि रबाडा की 8 गेंदों पर उनके बल्ले से सिर्फ 10 रन निकले हैं। राशिद खान की गेंदों पर भी वैभव खुलकर नहीं खेल पाते हैं और उनकी 10 गेंदों पर वैभव ने सिर्फ 13 रन बनाए हैं।

संपादकीय

भेदभाव की गुंजाइश

जिन धर्मों में वर्ण व्यवस्था का प्रावधान नहीं है, उन्हें अपनाने के बाद यह अपेक्षा स्वाभाविक रूप से रहती है कि संबंधित व्यक्ति जातिगत पहचान से मुक्त हो जाए और इस आधार पर उससे भेदभाव की गुंजाइश ना रहे।

सुप्रीम कोर्ट ने आंध्र प्रदेश हाई कोर्ट के उस निर्णय पर मुहर लगा दी है कि हिंदू, बौद्ध और सिख धर्म छोड़कर अलावा किसी अन्य महजब को अपना चुका व्यक्ति स्वत: अनुसूचित जाति की श्रेणी से बाहर हो जाता है। आंध्र हाई कोर्ट ने यह फैसला संविधान (अनुसूचित जाति) आदेश- 1950 के तहत दिया था। मामला अनुसूचित जाति के एक व्यक्ति के धर्म बदल कर ईसाई बनने से संबंधित है। हिंदू धर्म के अंदर अनुसूचित जातियों को मिले लाभ एवं संरक्षणों पर धर्मांतरण के बाद भी उस व्यक्ति ने दावा जताया था। मगर भारतीय संविधान के तहत ऐसा कोई प्रावधान नहीं है।

संविधान निर्माताओं ने अनुसूचित जातियों के लिए विशेष प्रावधान हिंदू धर्म के अंदर वर्ण व्यवस्था के तहत बरते गए ऐतिहासिक भेदभाव से उन्हें बचाने के लिए किया था। अनुसूचित जाति/ जनजाति अधिनियम भी उसी भावना के अनुरूप है। इस कानून के जरिए जातिगत आधार पर होने वाले भेदभाव या अपमान से दलित जातियों को संरक्षण देने का प्रयास किया गया है। जिन धर्मों में वर्ण व्यवस्था का प्रावधान नहीं है, उनमें शामिल होने के बाद यह अपेक्षा स्वाभाविक रहती है कि संबंधित व्यक्ति जातिगत पहचान से मुक्त हो जाए और इस आधार पर उससे भेदभाव की गुंजाइश ना रहे। उस स्थिति में उसे उन वैधानिक लाभ, संरक्षण, एवं आरक्षण की जरूरत नहीं रहेगी, जो हिंदू धर्म में रहते हुए गरिमामय जीवन के लिए जरूरी था। सर्वोच्च न्यायालय ने इस व्याख्या की पुष्टि करते हुए न्यायोचित निर्णय दिया है। हाई कोर्ट के निर्णय के खिलाफ दायर याचिका में दलील दी गई कि मजहब बदलने के बाद भी अनुसूचित जाति के लोग जातिगत बहिष्करण या भेदभाव से मुक्त नहीं होते। इसलिए उन्हें उन जातियों के लिए तय सारे लाभ मिलने चाहिए। बहरहाल, अगर यह सच है, तो फिर भेदभाव के कारणों की पड़ताल अधिक गहन रूप से की जानी चाहिए।

कूटनीति के जरिए पेट्रोलियम आपूर्ति को रखा बरकरार

28 फरवरी को ईरान पर अमेरिकी और इजरायली हमले के बाद पूरी दुनिया की चिंता ऊर्जा को लेकर थी। आज की दुनिया ऊर्जा के लिए जीवाश्म तेलों पर सबसे ज्यादा निर्भर है, जिसे हम पेट्रोल और डीजल के रूप में जानते हैं। इसके साथ ही प्राकृतिक गैस भी आज ऊर्जा की बड़ी स्रोत है। ईरान पर हमले के पहले बहुत लोगों ने होमुर्ज जलडमरूमध्य का नाम नहीं सुना था, लेकिन आज हर पढ़ा-लिखा और सचेत शख्स इसे जान गया है। फारस की खाड़ी और ओमान की खाड़ी के बीच स्थित इस संकरे समुद्री रास्ते पर ईरान का कब्जा है। इसके जरिए पूरी दुनिया को आपूर्ति होने वाला बीस प्रतिशत पेट्रोलियम पदार्थ इसी रास्ते से गुजरता रहा है। जहां तक भारत का सवाल है तो ईरान पर हमले के पहले तक भारत आयात होने वाले कच्चे तेल के आधे हिस्से की आपूर्ति इसी रास्ते होती थी। इससे भारत की चिंताएं बढ़ना स्वाभाविक थी। लेकिन भारत ने ना सिर्फ होमुर्ज के जरिए अपनी आपूर्ति को बनाए रखने की कूटनीतिक कोशिशें जारी रखीं, बल्कि वैकल्पिक रास्ते की भी तलाश तेज कर दी।

भारत अपनी पेट्रोलियम जरूरतों का करीब 85 फीसद हिस्सा आयात करता है। इसका आधा हिस्सा होमुर्ज के रास्ते ही आता था। भारतीय वाणिज्य मंत्रालय के आंकड़ों के अनुसार होमुर्ज के रास्ते भारत रोजाना ढाई से 2.7 मिलियन बैरल कच्चा तेल आयात करता था। लेकिन ईरान पर हमले के बाद यह घटकर इसका आधा ही रह गया है। वैसे तो होमुर्ज पर ओमान का भी दावा माना जाता है, लेकिन हकीकत में इस जलमार्ग पर पूरी तरह ईरान का दबदबा है। हमले के बाद ईरान के रिवोल्यूशनरी गार्ड ने इस रास्ते पर ना सिर्फ निगरानी बढ़ा दी है, बल्कि सीमित आवाजाही हो ही मंजूरी दी है।

भारत को इसकी आशंका थी, इसलिए उसने खाड़ी के देशों से तेल आयात के लिए वैकल्पिक मार्गों पर भी ध्यान देना शुरू कर दिया। संकट के क्षण में भले ही ईरान ने भारत के प्रति सहयोगी रूख अख्तियार कर रखा है, लेकिन भारत ने 'केप ऑफ गुड होप' यानी अफ्रीका के दक्षिण से गुजरने वाले जलमार्ग का भी उपयोग बढ़ा दिया है। इस बीच भारत ने कूटनीतिक प्रयास जारी रखा। इसका असर यह हुआ कि

ईरान भारतीय जहाजों को होमुर्ज से गुजरने की अनुमति दे रहा है। एलपीजी लदा एक जहाज कोचीन आ चुका है और ऐसे ही कुछ और जहाज तेल और गैस लेकर भारत आ रहे हैं। इस बीच भारत ओमान की खाड़ी से गुजरने वाले जहाजों को अपनी नौसेना के जरिए सुरक्षा दे रहा है। भारत सरकार के अनुसार, भारतीय रिफायनरियों के पास कच्चे तेल का पर्याप्त भंडार है। इस बीच भारत ने रूस से भी कच्चे तेल और गैस की आपूर्ति बढ़ा दी है। इसका असर यह हुआ है कि भारत में जिस तरह की महंगाई की आशंका थी, वैसी नहीं दिखी। हालांकि उद्योगों के लिए आपूर्ति किए जाने वाले व्यवसायिक गैस सिलिंडर की कीमतें बढ़ा दी गई हैं। तेल की बढ़ती कीमतों और व्यवसायिक गैस की आपूर्ति कम होने के चलते खाने-पीने वाली चीजों की कीमतों में बढ़ोतरी हुई है। महानगरों में सर्वसुलभ ठेले की चाय की कीमतें डेढ़ गुनी तक बढ़ चुकी हैं। लेकिन आपूर्ति श्रृंखला जारी रहने के चलते स्थिति खराब नहीं हुई है। जबकि पड़ोसी पाकिस्तान में आधी गाड़ियों को ही सड़कों पर उतरने की अनुमति है, वहां पेट्रोल भारत के मुकाबले करीब ढाई गुनी ऊंची दर पर मिल रहा है।

पश्चिम एशिया में संकट शुरू होने के बाद कूटनीति की कमान प्रधानमंत्री मोदी ने संभालते हुए युद्ध शुरू होने के महज 48 घंटों के भीतर आठ खाड़ी देशों संयुक्त अरब अमीरात, सऊदी अरब, कुवैत,ओमान, कतर, जार्डन, ओमान, बहरीन और इजरायल के नेताओं से बात की। इसके साथ ही उन्होंने फ्रांस के राष्ट्रपति इमैनुअल मैक्रां और मलयेशिया के प्रधानमंत्री अनवर इब्राहीम से बात की। इस बातचीत का मकसद वैश्विक हालात पर चर्चा के साथ ही भारतीय हितों को सुनिश्चित करना भी था। इस बीच 'गल्फ कोऑपरेशन काउंसिल' के महासचिव जासेम मोहम्मद अल बुदैवी से फोन पर वाणिज्य मंत्री पीयूष गोयल ने बात की है। इस बातचीत का मकसद खाड़ी देशों के इस संगठन के साथ एकजुटता प्रदर्शित करने के साथ ही भावी ऊर्जा संकट से भारत को मुक्ति दिलाने को लेकर रणनीति बनाना भी है। इसके पहले मंत्री हरदीप पुरी ने कतर की यात्रा की थी। दरअसल भारत इन देशों से भी पेट्रोलियम पदार्थों का आयात बढ़ाना चाहता है। भारत की कोशिश ईरान के विकल्प के रूप में अपनी ऊर्जा जरूरतों के लिए दूसरे देशों का भी सहयोग हासिल करने की है।

भारत को अपनी खेती के लिए रासायनिक खाद की भी जरूरत पड़ती है। भारत में खाद उत्पादन के लिए पेट्रोलियम पदार्थों का सबसे ज्यादा इस्तेमाल होता है। बेशक रूस से भारत को कच्चा तेल और खाद की सामग्री मिल रही है, लेकिन भारत की कोशिश आपूर्ति को विविधरंगी बनाए रखना है। इसकी वजह यह है कि किसी एक देश पर किसी खास आयात के लिए पूरी तरह निर्भर होना भविष्य में ब्लैकमेलिंग की वजह बन सकता है। भारत के पास आज करीब साठ करोड़ का ऐसा विशाल मध्य वर्ग है, जिसकी खरीद क्षमता लगातार बढ़ रही है। ऐसे में शायद ही कोई उपभोक्ता वस्तुओं का उत्पादक देश ऐसा होगा, जिसे भारत की जरूरत महसूस नहीं होगी। लेकिन भारत की अपनी जरूरतें भी हैं और यहां लोकतांत्रिक व्यवस्था है। ऐसी व्यवस्था में अगर किसी चीज की गंभीर कमी होती है तो अफरातफरी का माहौल उत्पन्न होना आसान हो जाता है। इससे महंगाई भी बढ़ती है। महंगाई बढ़ने से लोक के बीच नाराजगी बढ़ती है और फिर यह गुस्सा राज व्यवस्था के खिलाफ आंदोलनों के रूप में मुखर होता है। तेल और ईरान संकट को देखते हुए भारत ने कूटनीतिक कार्रवाई करते हुए जिस तरह अपनी जरूरतों के लायक आपूर्ति का संतुलन बनाए रखा है, वह गौर करने लायक है।

गैस की समस्या को सुलझाने का प्रयास

पहले कुछ तथ्यों की बात कर लें। भारत अपनी जरुरत का 60 फीसदी गैस आयात करता है और 40 फीसदी अपने यहां बनाता है। भारत में जो गैस बनती है उसमें 25 से 28 फीसदी बढ़ोतरी करने के लिए सरकार की ओर से कहा गया है। 25 फीसदी उत्पादन बढ़ने का मतलब है कि भारत 10 फीसदी गैस और बनाने लगेगा। यानी उसके बाद भी 50 फीसदी गैस बाहर से आनी है। दूसरा तथ्य यह है कि भारत में गैस की स्टोरेज क्षमता बहुत कम है। मेंगलुरू और विशाखापत्तनम में दो स्टोरेज फैसिलिटी है, जिसमें 'इंडियन एक्सप्रेस' की एक रिपोर्ट के मुताबिक एक लाख 40 हजार टन गैस स्टोर करने की सुविधा है। उसी रिपोर्ट के मुताबिक भारत में प्रति दिन की गैस की खपत 80 हजार टन की है। इसका मतलब है कि भारत के पास कायदे से दो दिन की खपत के बराबर भी स्टोरेज नहीं है। तीसरा तथ्य यह है कि भारत में दो सौ से कुछ ज्यादा बोटलिंग प्लांट हैं, जहां गैस के सिलेंडर भरे जाते हैं। वहां भी स्टोरेज की बड़ी सुविधा नहीं है और इन टाइम आपूर्ति यानी तत्काल आपूर्ति की ही व्यवस्था है। इसलिए अगर संकट बढ़ता है, जंग लंबी चलती है और कच्चे तेल व गैस की आपूर्ति प्रभावित होगी। सोचें, कोरोना महामारी के समय जब गैस की कीमतें बढ़ीं उस समय चीन ने तेल और गैस के भंडारण की नई सुविधाएं विकसित की और सस्ता तेल व गैस खरीद कर जमा करना शुरू किया। वह 36 नई फैसिलिटी डेवलप कर रहा है, जहां गैस का भंडारण होगा। इसमें ज्यादातर फैसिलिटी समुद्र तटों पर नहीं है, बल्कि देश के अंदर है। इसी तरह वह सौ अरब गैलन से ज्यादा तेल स्टोर करने की फैसिलिटी विकसित कर रहा है। खैर उससे हमारा क्या मुकाबला? हम तो विश्वगुरू हैं!

अब यही हम लोगों की असली क्षमता की परीक्षा होनी है। अब दुनिया को यह दिखा देना होगा कि भारत विश्वगुरू है। इसके लिए गैस बनाने के नए रास्तों पर अमल शुरू करने का समय आ गया है। जैसे अमेरिका ने चट्टान से तेल निकाल लिया और अफ्रीकी देश डीप सी एक्सप्लोरेशन कर रहे हैं उसी तरह भारत को नालों से गैस बनाने और गाड़ियों के पहिए में भरी हवा से गैस बनाने के तरीके पर व्यापक रूप से अमल शुरू करना चाहिए। इससे भारत को अपनी सारी समस्या का समाधान मिल जाएगा। भारत में तो नाले ही नाले हैं। चारों तरफ नाले हैं और लगभग सभी नाले खुले हुए भी हैं। उनको शायद इसलिए भी नहीं ढका गया होगा कि पता नहीं कब इससे गैस बनाने की जरुरत आन पड़े। तमाम बड़े शहरों के बड़े नाले गंगा और यमुना जैसी नदियों में गिरते हैं और इन पवित्र नदियों की स्वच्छता में अपना योगदान देते हैं। इन तमाम बड़े बड़े नालों से गैस बनाई जा सकती है।

लोग यह सुन कर हंसने लगते हैं कि नाले से कैसे गैस बनेगी। लेकिन प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने खुद कहा था कि उन्होंने एक व्यक्ति को नाले की गैस से चाय बनाते देखा था। प्रधानमंत्री मोदी ने ऐसा नहीं है कि यह बात किसी चुनावी रैली में कही थी। उन्होंने दिल्ली के विज्ञान भवन में 10 अगस्त 2018 को वर्ल्ड बायोफ्यूल डे के कार्यक्रम में तमाम विशेषज्ञों की मौजूदगी में कही थी और सबने इस पर तालियां बजाई थी। प्रधानमंत्री ने कहा था कि उन्होंने एक व्यक्ति को देखा, जिसकी दुकान नाले के बराबर में थी, उसने नाले से निकलने वाली गैस को इकट्ठा किया और उसे पाइप के जरिए अपनी दुकान में लाकर उसका इस्तेमाल चाय बनाने के लिए किया। जैसे ताली, थाली बजाने से पैदा हुई ऊर्जा से कोरोना खत्म होने या लॉकडाउन से कोरोना का सर्किल टूटने जैसे तर्क गढ़ कर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की बातों को जस्टिफाई किया गया वैसे ही नाले की गैस से चाय बनाने की बात को भी बहुत से जानकारों ने जस्टिफाई किया कि नालों की मिथेन गैस का इस्तेमाल किया जा सकता है। हालांकि पता नहीं क्यों किसी ने इस पर प्रयोग करके गैस बनाना शुरू नहीं किया? अब समय आ गया है कि नालों से गैस बनाई जाए और उसका इस्तेमाल करके दुनिया को दिखाया जाए कि भारत विश्वगुरू है।

प्रधानमंत्री मोदी ने उसी वर्ल्ड बायोफ्यूल डे के कार्यक्रम में ही यह किस्सा भी सुनाया था कि एक बार वे गुजरात में अपने काफिले के साथ जा रहे थे तो उन्होंने देखा कि उनके काफिले के आगे एक व्यक्ति स्कूटर पर ट्रैक्टर का भरा हुआ ट्यूब लेकर जा रहा था। उन्होंने उसे रूकवा कर पूछा तो उस व्यक्ति ने बताया कि उसने अपने घर पर गोबर और कचरे से बनने वाला बायोगैस प्लांट लगा रखा है। वहां वह गैस बनाता है और उसे ट्रैक्टर के ट्यूब में भर कर अपने खेत पर ले जाता है, जहां उससे अपना पंप चला कर सिंचाई का काम करता है। अब पता नहीं इस तरह के प्लांट लगाने और इस तरह से ट्यूब में भर कर उसे लोगों के घरों तक या रीफीलिंग सेंटर्स या बोटलिंग प्लांट तक ले जाने का उपक्रम देश में क्यों नहीं किया गया? लेकिन अब उसका भी समय आ गया है। बाकी इस तरह से गैस बनाने और लोगों तक पहुंचाने के और भी मौलिक उपाय जरूर भारत के पास होंगे। उनका इस्तेमाल करके गैस की समस्या को सुलझाने का प्रयास करना चाहिए।

रोजाना 5 मिनट का ब्रेथर ब्रेक आपको दिनभर रखेगा ऊर्जावान

आजकल की तेज-तर्रार जिंदगी में खुद पर ध्यान देना बहुत जरूरी हो गया है। काम के बीच-बीच में ब्रेक लेना हमारे मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य के लिए फायदेमंद हो सकता है। यह हमें ताजगी और ऊर्जा देता है। इस लेख में हम जानेंगे कि कैसे हम अपने रोजमर्रा के जीवन में 5 मिनट के ब्रेथर ब्रेक को शामिल करके खुद को बेहतर बना सकते हैं। यह एक सरल, लेकिन प्रभावी तरीका है खुद को ताजगी देने का।

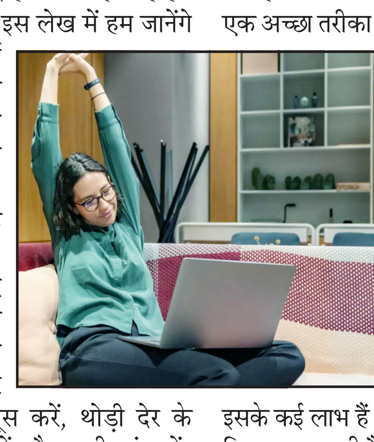

गहरी सांस लेना खुद को ताजगी देने का एक सरल और असरदार तरीका है। जब भी आप काम कर रहे हों और थकान महसूस करें, थोड़ी देर के लिए अपने काम से ब्रेक लें और गहरी सांस लें। इससे आपके शरीर में ऑक्सीजन की मात्रा बढ़ती है और तनाव कम होता है। गहरी सांस लेने से आपका मन शांत होता है और आप फिर से तरोताजा महसूस करते हैं। इसे दिन में कई बार दोहराना फायदेमंद हो सकता है।

काम करते समय शरीर में अकड़न होना आम बात है, लेकिन इसे दूर करने के लिए कुछ मिनट स्ट्रेचिंग करना बहुत फायदेमंद हो सकता है। अपने हाथ-पैरों को खींचें, गर्दन को घुमाएं और कमर को मोड़ें। इससे खून का बहाव बेहतर होता है और मांसपेशियों की थकान कम होती है। स्ट्रेचिंग करने से आपका शरीर लचीला बनता है और आप फिर से ऊर्जा से भरपूर महसूस करते हैं। इसे रोजाना अपनी दिनचर्या में शामिल करना आसान है।

हल्का चलना भी खुद को ताजगी देने का एक अच्छा तरीका है। ऑफिस में थोड़ी देर टहलना या सीढ़ियां चढ़ना आपके शरीर को सक्रिय रखता है और ऊर्जा बढ़ाता है। इससे आपका मन भी तरोताजा होता है और आप फिर से काम पर ध्यान केंद्रित कर पाते हैं। हल्का चलना न केवल शारीरिक बल्कि, मानसिक स्वास्थ्य के लिए भी फायदेमंद है। इसे अपनी दिनचर्या का हिस्सा बनाना आसान है और इसके कई लाभ हैं। पर्याप्त पानी पीना हमारे शरीर के लिए बहुत जरूरी है। काम करते समय अक्सर लोग पानी पीना भूल जाते हैं, जिससे शरीर में पानी की कमी हो सकती है। हर घंटे में एक गिलास पानी पीने की आदत डालें, ताकि आपका शरीर तरोताजा रहे और थकान कम हो। इससे आपकी ऊर्जा स्तर बढ़ता है और आप तरोताजा महसूस करते हैं। पानी पीने से न केवल आपका शरीर स्वस्थ रहता है, बल्कि आपका मन भी शांत रहता है। ध्यान लगाना हमारे मानसिक स्वास्थ्य के लिए बहुत फायदेमंद होता है। काम के बीच में कुछ मिनट ध्यान लगाने से मन शांत होता है और तनाव कम होता है। इसे रोजाना करने से हमारी एकाग्रता क्षमता बढ़ती है और हम अधिक ध्यान से काम कर पाते हैं।

भाजपा के लिए परीक्षा वाला चुनाव

चार राज्यों और एक केंद्र शासित प्रदेश के चुनाव वैसे तो दोनों सबसे बड़ी राष्ट्रीय पार्टियों के साथ साथ मजबूत प्रादेशिक क्षत्रपों और वामपंथी पार्टियों के लिए परीक्षा वाले हैं। लेकिन ये चुनाव खासतौर से भाजपा के लिए परीक्षा वाले इसलिए हैं क्योंकि इनके नतीजों से पता चलेगा कि भाजपा गैर कांग्रेस दलों और प्रादेशिक क्षत्रपों के मुकाबले अपनी चिरंतन कमजोरी से उबर पाई है या नहीं। यह भी पता चलेगा कि क्षेत्रीय और भाषायी अस्मिता वाले राज्यों में भाजपा की अखिल भारतीय राजनीति के दांव पेंच, व्यापक हिंदू ध्रुवीकरण और राष्ट्रवाद की राजनीति कारगर होती है या नहीं। ध्यान रहे इस बार जिन चार राज्यों पश्चिम बंगाल, असम, तमिलनाडु व केरल और एक केंद्र शासित प्रदेश पुडुचेरी में, चुनाव हो रहा है, वहां हिंदुत्व बिल्कुल उस रूप में न तो प्रचलित है और न स्वीकार्य है, जिस रूप में भाजपा उसका उत्तर व पश्चिमी भारत में राजनीतिक इस्तेमाल करती है। साथ ही इन राज्यों में राष्ट्रवाद की भावना के साथ साथ उप राष्ट्रीयता की एक बेहद मजबूत अंतरधारा भी हमेशा मौजूद रहती है। इसलिए इन राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों का चुनाव भाजपा के लिए परीक्षा वाला है।

तमिलनाडु को छोड़ दें तो बाकी तीनों बड़े राज्यों में भाजपा अकेले लड़ रही है या गठबंधन की केंद्रीय पार्टी है। सबसे बड़े और सबसे ज्यादा विधानसभा वाले राज्य पश्चिम बंगाल में भाजपा अकेले लड़ रही है। असम में जरूर असम गण परिषद, बोडोलैंड पीपुल्स फ्रंट और यूपीपीएल के साथ भाजपा का तालमेल है लेकिन गठबंधन का नेतृत्व भाजपा कर रही है। 126 सदस्यों की विधानसभा में इस बार वह अकेले बहुमत हासिल करना चाहती है। इससे पहले दो चुनावों से वह बहुमत के आंकड़े यानी 64 सीट से थोड़ा नीचे रूक गई थी। उधर केरल में भी भाजपा ने साबू जैकब की ट्वेंटी20 पार्टी से तालमेल किया है। यह एक ईसाई पहचान वाली पार्टी है। वहां भी भाजपा केंद्रीय ताकत है। तमिलनाडु में भारतीय जनता पार्टी अपना मजबूत आधार नहीं बना पा रही है और उसे अन्ना डीएमके के पीछे चलना पड़ रहा है, जिसने लोकसभा चुनाव में भाजपा को छोड़ दिया था। हालांकि बाद में भाजपा फिर उसके साथ जुड़ी। इन राज्यों के चुनाव भाजपा के लिहाज से इसलिए भी बहुत अहम हैं क्योंकि इनसे दक्षिण भारत में भाजपा के विस्तार की संभावनाओं का भी पता चलेगा। धीरे धीरे ही सही लेकिन भाजपा ने कर्नाटक के बाद तेलंगाना में अपना मजबूत आधार बना लिया है। केरल में पिछले चुनाव में उसका वोट प्रतिशत दहाई में पहुंच गया। उसके गठबंधन को 12 फीसदी से ज्यादा वोट मिले, जो लोकसभा चुनाव में और बढ़ा।

बहरहाल, अगले महीने होने वाले चुनावों में भाजपा के लिए सबसे अहम पश्चिम बंगाल का चुनाव है। भारत की राजनीति में एकाध ही प्रादेशिक क्षत्रप हैं, जिनसे भाजपा सीधी लड़ाई लड़ती है और हरा नहीं पाती है। ममता बनर्जी को नरेंद्र मोदी और अमित शाह की भाजपा आज तक नहीं हरा पाई है। 2019 के लोकसभा चुनाव में जब भाजपा बंगाल में सबसे मजबूत होकर उभरी तब भी ममता बनर्जी की पार्टी को उससे ज्यादा सीटें मिलीं। उसके बाद के चुनाव में तो ममता ने चैलेंज देकर भाजपा को सौ सीट के नीचे रोका। भाजपा को 2021 के चुनाव में 77 सीटें मिलीं। इसकी एक व्याख्या तो यह है कि भाजपा 2016 की तीन सीटों से बढ़ कर 77 पहुंची और दूसरी व्याख्या यह है कि भाजपा 2019 के लोकसभा चुनाव में सौ से ज्यादा सीटों पर मिली बढ़त से घट कर 77 पर रह गई। जो हो, इस बार नरेंद्र मोदी और अमित शाह के नेतृत्व वाली भाजपा विधानसभा चुनाव में तीसरी बार ममता बनर्जी के मुकाबले सीधी लड़ाई में उतरेगी।

सियासी शतरंज के मोहरे बनने से बचें, भारतीय मुसलमानों के नाम एक अपील

मआज़ खान

जब भी किसी कौम की भावनाओं को सियासत की बिसात पर मोहरे की तरह इस्तेमाल किया जाए, तो सबसे पहले नुकसान उसी कौम का होता है। बंगाल में हुमायूं कबीर द्वारा 'बाबरी मस्जिद की बुनियाद' रखने का एलान भी कुछ ऐसा ही कदम था। एक नासमझ सियासी कार्यकर्ता भी यह समझ सकता है कि अयोध्या के ऐतिहासिक और संवेदनशील मुद्दे को बंगाल में भुनाने का मकसद बंगाल के मुसलमानों की तरक्की नहीं था।

सांप्रदायिकता की सियासत, तरक्की की नहीं : बंगाल में बाबरी मस्जिद बनने से वहाँ के मुसलमानों को क्या मिलेगा? न स्कूल, न अस्पताल, न रोज़गार, न हक़। यह सिर्फ़ एक भावनात्मक मुद्दा उछालकर समाज को दो हिस्सों में बाँटने की कोशिश है। जब ध्रुवीकरण तेज़ होता है, तो फायदा हमेशा उस दल को मिलता है जिसकी पूरी सियासत ही इसी बँटवारे पर टिकी हो। नुकसान में आम मुसलमान रह जाता है, जिसकी असल ज़रूरतें - तालीम, सेहत, रोज़गार - बहस से ही गायब हो जाती हैं।

प्रतीकों से पेट नहीं भरता : मस्जिद, मंदिर, मूर्ति - ये आस्था के केंद्र हैं, सम्मान के हक़दार हैं। लेकिन जब हुकूमतें बुनियादी सुविधाएँ देने में नाकाम रहती हैं, तो वे जनता का ध्यान भटकाने के लिए मज़हबी प्रतीकों का सहारा लेती हैं। एक हज़ार करोड़ की 'डील' की खबरें अगर सच हैं, तो यह साफ़ करता है कि मामला कौम की ख़िदमत का नहीं, बल्कि करोड़ों के लेन-देन और सियासी सौदेबाज़ी का है। कौम के नाम पर जमा की गई दौलत और जज़्बात, आख़िर में कौम तक पहुँचते ही नहीं।

अतीत से सबक लें : बार-बार मुसलमानों को जज़्बाती मुद्दों में उलझाकर उनका वोट हासिल किया गया, लेकिन बदले में मिला क्या? सचर कमेटी की रिपोर्ट आज भी गवाही देती है कि तालीम, नौकरी और सामाजिक स्तर पर मुसलमान देश में सबसे पीछे हैं। हमें खुद से पूछना होगा - 75 साल में कितने नेता आए जिन्होंने 'मस्जिद' के नाम पर वोट माँगा, और कितने थे जिन्होंने 'स्कूल' के नाम पर?

अब रास्ता क्या हो : भारतीय मुसलमानों को अब सियासी समझदारी दिखानी होगी। नेता की नीयत परखें: जो नेता आपको सिर्फ़ 'मुसलमान' की तरह देखे, उसे नकारें। जो आपको 'हिंदुस्तानी शहरी' की तरह देखकर आपके बच्चों की तालीम, आपके मोहल्ले की सड़क, आपके लिए रोज़गार की बात करे, उसे सुनें।

जज़्बात से नहीं, अक्ल से फैसला: कोई भी क़दम उठाने से पहले सोचें - इससे मेरी कौम का, मेरे मुल्क का भला होगा या सिर्फ़ किसी सियासी दल का? सवाल पूछें, हिसाब माँगें: जो लीडर कल तक आपके वोट से वज़ीर बना, उसने आपके इलाक़े में कितने स्कूल खुलवाए? कितने नौजवानों को रोज़गार दिलाया?

ध्रुवीकरण से बचें: जब भी कोई नेता हिंदू-मुस्लिम की बात करे, समझ जाएँ कि वो आपकी असल परेशानियों पर पर्दा डाल रहा है। बाबरी मस्जिद का मुद्दा अदालत में दशकों चला। उसका फ़ैसला आ चुका। अब उस मुद्दे की लाश को कंधे पर उठाकर घूमना, बंगाल हो या बिहार, सिर्फ़ उन ताक़तों को मज़बूत करेगा जो हमें हमेशा दोयम दर्जे का शहरी बनाकर रखना चाहती हैं। कौम को मस्जिदें नहीं, मदरसे के साथ-साथ मॉडर्न स्कूल चाहिए। नारों से नहीं, कारोबार से तरक्की आएगी। जज़्बाती तक़रीरों से नहीं, तालीम और तहज़ीब से इज़्ज़त मिलेगी।

इसलिए अब वक्त है कि हम सियासी लीडरों की दुकानदारी का सामान बनने से इनकार कर दें। जो भी हमारे नाम पर, हमारे जज़्बात का सौदा करे - चाहे वो एक हज़ार करोड़ में करे या एक वोट में - हमें उसे पहचानना होगा और उससे बचना होगा। कौम का मुस्तकबिल सियासी मोहरा बनने में नहीं, बल्कि एक बाशऊर, तालीमयाफ्ता और बेबाक शहरी बनने में है।

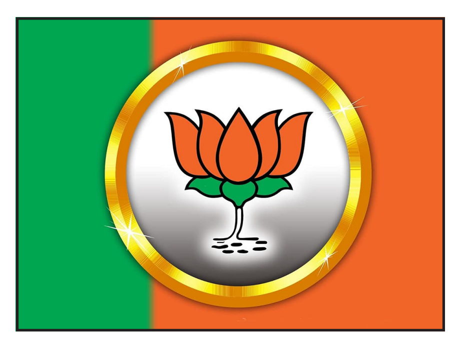

सभ्यतागत संघर्ष बता रही है तो उसकी बेचैनी को समझा जा सकता है। खुद प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने चुनाव की घोषणा से एक दिन पहले कोलकाता के परेड ग्राउंड मैदान में अपने भाषण में यह भय दिखाया कि हिंदू अल्पसंख्यक हो जाएंगे। असल में भारत की जो सभ्यता है वह कई संस्कृतियों का समुच्य है। भारत विरूद्धों में सामंजस्य साधने की सहस्त्राब्दियों पुरानी व्यवस्था का नाम है। भाजपा सांस्कृतिक भिन्नता को सभ्यतागत संघर्ष बता रही है। यह काम तमिलनाडु में भी किया जा रहा है। सो, राजनीतिक प्रबंधन, चुनाव आयोग की भूमिका, भाजपा की सर्वशक्तिमान सत्ता की ताकत और चुनाव को सभ्यतागत संघर्ष बनाने का नैरेटिव बंगाल में कितना कामयाब होता है इस पर सबकी नजर होगी। अगर भाजपा इतना सब करने के बाद भी नहीं जीतती है तो उसे गंभीरतापूर्वक अपनी इस राजनीति पर विचार करना होगा।

असम में भाजपा के लिए लड़ाई अपेक्षाकृत आसान इसलिए लगती है क्योंकि वहां परिसीमन के बाद 105 के करीब सीटें ऐसी हो गईं, जिन पर मुस्लिम मतदाताओं का असर बिल्कुल खत्म हो गया है। भाजपा इन्हीं सीटों पर पूरा दम लगा कर लड़ती है। सांप्रदायिक ध्रुवीकरण और घुसपैठ के नाम पर राष्ट्रीय सुरक्षा का नैरेटिव भाजपा को सपोर्ट करता है। कुछ भाजपा के प्रयासों और कुछ अपने कारणों से कांग्रेस असम में कमजोर हुई है। उसके कई नेता पार्टी छोड़ कर गए हैं। फिर भी गौरव गोगोई पूरी ताकत से लड़ रहे हैं। केरल में भाजपा का मुख्य प्रयास अपना वोट आधार बढ़ाने और ऐसी राजनीतिक बिसात बिछाने का है, जिसमें कांग्रेस फिर नहीं जीत पाए।

गाना मिलते ही उनको लगता था कि जवान हो गई... फुल एनर्जेटिक थीं आशा भोसले

दिग्गज गायिका आशा भोसले के निधन से पूरे संगीत जगत में शोक की लहर है. उनके जाने के बाद लगातार कलाकार और संगीत से जुड़े लोग उन्हें याद कर रहे हैं. इसी बीच मशहूर गीतकार समीर अंजान ने भी भावुक होकर अपनी प्रतिक्रिया दी है. उन्होंने आशा जी के साथ अपने लंबे और खास रिश्ते को याद करते हुए गाने को लेकर उनकी मेहनत की तारीफ की और शोक जताया.समीर अंजन ने एएनआई से बातचीत करते हुए बताया, %आज बहुत दुखद खबर मिली, सदी की महान गायिका आशा भोसले जी हमारे बीच नहीं रही. आशा जी का जाना, आवाज की दुनिया की एक सदी का जाना जैसा है. हमारे उनके साथ बहुत गहरे रिश्ते थे और मेरे स्वर्गीय पिता अंजान से उनके रिश्ते बहुत अच्छे थे. मेरे लिए भी उन्होंने बहुत गाने गाए और मेरे पिताजी के अनगिनत गाने गाए. असल में आशा जी एक सिंगर नहीं, बल्कि एक इंस्टीट्यूशन की तरह थी. आज वो हमारे बीच नहीं है, मगर उनकी आवाज सदियों तक हमारे बीच रहेगी. ये म्यूजिक की दुनिया का बहुत बड़ा नुकसान है, जिसकी भरपाई कभी नहीं की जा सकती है.%

हर भाषा में आशा भोसले ने गाया गाना

उन्होंने आगे बताया, %उन्होंने कवाली, डिस्को, पॉप और गजल सब तरह के गाने गाए है और ऐसी कोई भाषा नहीं होगी, जिसमें उन्होंने नहीं गाया हो. कुछ दिनों पहले वो एक कॉन्सर्ट करके आई थी. 92 की उम्र में किसी का चलना मुश्किल होता है, मगर उनका विल पावर और डेडीकेशन इतना गहरा था कि वो कभी जिंदगी और मौत के बारे में सोचती नहीं थी. जब उन्हें गाना मिलता था तो उन्हें लगता था कि वो फिर से जवान हो गई है. बता दें कि समीर अंजान और आशा भोसले का रिश्ता कई साल पुराना रहा है. समीर के पिता अंजान भी अपने समय के मशहूर गीतकार थे और उनका भी आशा जी के साथ गहरा रिश्ता था. आशा भोसले ने उनके लिखे कई गानों को अपनी आवाज दी, जिससे उनकी पहचान और मजबूत हुई. उनके निधन के बाद हर कोई सदमे में है और उनकी मेहनत और गानों को दिल से याद कर रहा है।

क्या हमने संघर्ष नहीं किया? इंडस्ट्री में काम ना मिलने की शिकायत करने वालों को जब आशा भोसले ने कही थी ये तीखी बात...

दिग्गज गायिका आशा भोसले के निधन के बाद उनके कई पुराने इंटरव्यू और बयान एक बार फिर चर्चा में आ गए हैं. 92 साल की उम्र में उनके जाने से संगीत जगत में मातम छा गया है. इसी बीच उनका एक बेबाक बयान सोशल मीडिया पर तेजी से वायरल हो रहा है, जिसमें उन्होंने इंडस्ट्री में काम न मिलने की शिकायत करने वालों को सीधा जवाब दिया था. आशा भोसले ने कहा, देखिए, जिसको अपना काम आता है, न वो ये कभी कहता है कि कोई मुझे गाने नहीं देता है, ये काम करने नहीं देता है. जिसको काम आता है, उसको कॉन्फिडेंस होता है. आपने कभी सुना, लता ने आशा ने लिखा किसी पेपर में कि हमको कोई गाने नहीं देता है. क्या आप समझते हैं हमने नहीं संघर्ष किया है, हमने मेहनत नहीं की है. हमने बहुत यादा मेहनत की है, लेकिन हमने ये नहीं कहा कि हमको कोई गाने नहीं देता है या गवाता नहीं है. ऐसा होता नहीं है. जो हीरा है वो चमकेगा ही. इसी तरह हमारे पास काम है तो हमें काम मिलता है.उन्होंने आगे कहा, मैं अगर आपको कहती हूं कि कल खाना मत खाओ, तो क्या आप खाना नहीं आयेंगी. हमारे कहने से म्यूजिक डायरेक्टर दूसरे सिंगर्स को गाना नहीं देंगे, जरूर देंगे. ये तो शो बिजनेस है और इसमें हर आदमी नई चीजें ढूंढता है. अगर उन्हें नई चीज मिलती है तो वो एक मिनट में सिंगर्स को काम देंगे.

आशा भोसले ने किया था खुद को साबित

बता दें कि आशा भोसले ने अपने करियर में खुद को साबित करने के लिए बहुत संघर्ष और मेहनत किया था. कम उम्र में ही उन्होंने गाना शुरू किया और शुरुआत में उन्हें ऐसे गाने मिले, जिन्हें बड़े सिंगर्स छोड़ देते थे. लेकिन उन्होंने इन्हीं गानों को अपनी ताकत बना लिया. धीरे-धीरे उन्होंने हर तरह के संगीत फिल्मी, गजल, पॉप और क्लासिकल में अपनी अलग पहचान बनाई. उन्होंने कभी हालात को लेकर शिकायत नहीं की, बल्कि अपने काम से जवाब दिया. उनके इस दुनिया से जाने से हर कोई उन्हें भावभीनी श्रद्धांजलि दे रहा है और उनके गानों और संघर्षों को याद कर रहा है.

आशा भोसले संगीत की दुनिया का एक ऐसा नाम हैं, जिन्होंने अपने गानों के जादू से कई फिल्मों को ऊचाईयों पर पहुंचाया है. उन्हें इंडस्ट्री में वर्सेटाइल सिंगर की उपाधि मिली थी, हालांकि ये मुकाम हासिल कर पाना उनके लिए आसान नहीं रहा है. जहां बड़ी बहन लता मंगेशकर को देशभर में स्वर कोकिला का ताज हासिल हुआ था, वहीं आशा भोसले के लिए अपनी जगह बनाना मुश्किल रहा है, लेकिन इस मुकाम तक पहुंचने के लिए उनके करियर में सबसे बड़ा रोल प्ले करते हैं ओपी नय्यर.

60 फिल्में, 324 सॉन्ग... ओपी नय्यर के साथ आशा भोसले ने गाए सबसे ज्यादा गाने

आशा भोसले ने 12 अप्रैल, 2026 को दुनिया से अलविदा कह दिया, कई दिनों से वो तबीयत से परेशान थीं. 92 साल की उम्र में उन्होंने मुंबई के ब्रीच कैंडी अस्पताल में आखिरी सांसें ली. सिंगर का इस तरह से जाने से इंडस्ट्री में मातम का माहौल छोड़ गया, मानों एक युग ही खत्म हो गया. अपने करियर में उन्होंने 12 हजार से भी ज्यादा गाने गाए हैं. प्रोफेशनल लाइफ के साथ ही साथ आशा ताई ने अपनी पर्सनल लाइफ को भी लेकर खूब सुर्खियां बटीरी थीं.

16 साल की उम्र में आशा ताई ने घर वालों के खिलाफ जाकर गणपतराव भोसले से शादी कर ली थी. दोनों की उम्र में काफी फासला भी था, लेकिन आशा ताई की ये शादी उनके पर्सनल लाइफ और प्रोफेशनल लाइफ दोनों के ही लिए अच्छी नहीं थी. उन्हें घरेलु हिंसा का सामना करना पड़ा और इन सभी का फर्क उनके संगीत करियर पर भी दिखा. शादी के तनाव और उथल-पुथल भरे इन सालों में आशा का करियर भी कुछ खास आगे नहीं बढ़ रहा था. जबकि, लता इन सालों में कामयाबी के उस शिखर पर पहुंच चुकी थीं.

हालांकि, फिल्म 'परिणीता' और 'बूट पॉलिश' से उनको पहचान मिलनी शुरू हो गई. लेकिन, उन्होंने अपने करियर का सबसे अहम पड़ाव को ओपी नय्यर के साथ देखा. फिल्म 'सीआईडी' के बाद से उन्होंने आशा भोसले के साथ गानों पर काम करना शुरू कर दिया. दोनों ने फिल्म नया दौर में साथ काम किया और दर्शकों को इस फिल्म के गाने खूब पसंद आए थे, इसी फिल्म के जरिए आशा भोसले को लीड रोल की आवाज बनने का मौका मिला.

आशा भोसले ने अपने पूरे संगीत करियर में जिस संगीतकार के साथ सबसे ज्यादा गाने दिए वो ओपी नय्यर ही थी. दोनों ने एक साथ 60 फिल्मों में काम किया था, इन फिल्मों के कुल गानों की बात की जाए, तो वो 324 गाने थे. यानी हर फिल्म में आशा ताई के लगभग 5 से ज्यादा गाने हुआ करते थे. इन फिल्मों में दिए गए गानों के जरिए आशा भोसले म्यूजिक इंडस्ट्री का बड़ा नाम बनी और उन्होंने अलग-अलग अंदाज में अपनी आवाज का जादू बिखेरा।

बॉलीवुड इंडस्ट्री की मशहूर सिंगर और स्वर कोकिला लता मंगेशकर की छोटी बहन आशा भोसले का 92 साल की उम्र में निधन हो गया. आशा भोसले को संगीत विरासत में मिली. जब उन्होंने होश संभावा उस दौरान तो उनकी बड़ी बहन लता का करियर भी शुरू हो गया था. आशा ने भी लता की तरह ही संगीत के जहां में कदम रखा और अपना एक अलग मुकाम हासिल किया. उनके हिस्से एक से बढ़कर एक गाने आए और अपनी हाई रेंज से उन्होंने दुनियाभर की जनता को मंत्रमुग्ध किया और अपनी खुद की पहचान बनाई.

आशा भोसले यूं तो 92 साल की उम्र में भी काफी एक्टिव थीं इसलिए उनके निधन की खबर कई फैंस के लिए एक सदमें की तरह रही. वे मुंबई के ब्रीच कैंडी अस्पताल में एडमिट थीं और मल्टिपल ऑर्गन फेलियर की वजह से उनका निधन हो गया. सिंगर ने 8 दशकों में 20 से यादा भाषाओं में 12,000 से भी यादा गाने गाए और फैंस का भरपूर मनोरंजन किया. अब जब वे इस दुनिया में नहीं रहीं तो दुनियाभर के लोग उन्हें ट्रिब्यूट दे रहे हैं. वहीं मुंबई में चल रहे मुंबई इंडियंस और रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु के मैच में भी आशा भोसले को ट्रिब्यूट दिया गयक्रिकेट और बॉलीवुड का नाता बहुत पुराना रहा है और जितना पुराना रहा है उतना ही गहरा भी रहा है. आईपीएल 2026 में बेंगलुरु और मुंबई के मैच के दौरान आशा ताई को भी याद किया गया और इस मौके पर उनके सम्मान में प्लेयर्स काले रंग का आर्मबैंड्स पहने भी नजर आए. इसके अलावा इस मौके पर मैच के दौरान बीच में आशा भोसले को मुंबई के वानखेड़े मैदान में ट्रिब्यूट दिया गया और उनके एक से बढ़कर एक सदाबहार गीत बजते नजर आए.

आशा भोसले ने कई पीढ़ियों के लिए गाने गाए. उसमें से एक गाना उर्मिला मातोंडकर और आमिर खान की फिल्म ओ रंगीला रे का था. ये गाना आशा भोसले ने गाया था और आज भी बहुत पसंद किया जाता है. इसका संगीत ए आर रहमान ने दिया था. गाना बजते ही सभी दर्शकों के बीच एक अलग ही उत्साह नजर आया.मैच के दौरान ॠषि कपूर और नीतू कपूर की फिल्म खेल खेल में का गीत एक मैं और एक तू भी बजा. इस गाने ने भी मैच के बीच में आशा ताई की यादें ताजा कर दीं. आशा ताई का वो औरा ही था जो बताता है कि आखिर इतने सालों बाद भी ये गाना यूथ के बीच कितना पॉपुलर है.मैच के बीच में आशा भोसले को ट्रिब्यूट के तौर पर 1971 में आई जितेंद्र की फिल्म कारवां का गाना पिया तू अब तो आजा भी बजा जिसने पूरे माहौल में जोश भर दिया. इस गाने को आशा भोसले ने गाया था और इसे हेलन पर फिल्माया गया था. आज भी ये गाना जहां भी बजता है माहौल अपने आप बन जाता है.आर सी बी और मुंबई इंडियंस के बीच चल रहे मैच के दौरान अमिताभ बचन और परवीन बॉबी की फिल्म महान का गाना ये दिन तो आता है एक दिन जवानी में भी बजा. ये गाना अपने आप में ही खास है और जहां भी बजता है माहौल बना देता है. गाने में आशा भोसले की एनर्जेटिक वॉइस का कमाल देखने को मिल सकता है. मंगेशकर परिवार के साथ दिग्गज क्रिकेटर सचिन तेंदुलकर की भी खास बॉन्डिंग रही. लता मंगेशकर के निधन पर भी सचिन तेंदुलकर के चेहरे पर उदासी नजर आई थी और अब आशा भोसले के निधन पर भी उनकी आंखें भारी नजर आई. वे ॠष्क्ष्क्र-स्ड्ढ का मैच देखने मुंबई के वानखेड़े स्टेडियम पर मौजूद थे।

माता-पिता दोनों सुपरस्टार लेकिन बेटी निकली FLOP

बॉलीवुड में इस एक्ट्रेस ने दो दशक पहले अपने कदम रखे थे, हालांकि उन्हें बड़ी और खास पहचान नहीं मिल पाई. जबकि इस एक्ट्रेस के पिता हिंदी सिनेमा के सबसे बड़े दिग्गजों में गिने जाते हैं. उनकी मां की गिनती भी अपने समय की टॉप हसीनाओं के रूप में होती है. वहीं इसके सौतेले भाई भी बड़े सुपरस्टार है. हालांकि ये एक्ट्रेस अपनी एक्टिंग से लोगों का दिल जीतने में नाकाम रही. यहां बात हो रही है ईशा देओल की.दिग्गज अभिनेता धर्मेंद्र और सदाबहार अदाकारा हेमा मालिनी की बेटी ईशा देओल 2 नवंबर को 44 साल की हो गई हैं. 2 नवंबर 1981 को उनका जन्म मुंबई में हुआ था. अब तक कई फिल्मों का हिस्सा रह चुकीं ईशा 44 साल की उम्र में अकेली घूम रही हैं. उन्होंने अपने बचपन के दोस्त से शादी की थी, लेकिन एक्ट्रेस का तलाक हो गया था.

2002 में किया था डेब्यू

ईशा देओल ने अपने माता-पिता और सौतेले भाई सनी देओल की राह पर चलते हुए बॉलीवुड में ही करियर बनाया. हालांकि सफलता और लोकप्रियता उनके करीब नहीं आई. एक्ट्रेस ने बतौर एक्ट्रेस अपनी शुरुआत 'कोई मेरे दिल से पूछो' फिल्म से की थी. ये पिक्चर साल 2002 में रिलीज हुई थी. उन्होंने दस, धूम, युवा, नो एंट्री, कैश, चुरा लिया है तुमने, तुम जानो ना हम, कुछ तो है जैसी फिल्मों में भी काम किया था.

ईशा देओल ने अपने बचपन के दोस्त भरत तख्तानी से शादी की थी. बताया जाता है कि भरत पर ईशा महज 13 साल की उम्र में अपना दिल हार बैठी थीं. दोनों ने एक दूसरे को लंबे वक्त तक डेट किया था. वहीं साल 2012 में उन्होंने अपने रिश्ते को नया नाम दे दिया था. 2012 में भरत और ईशा ने धूमधाम से शादी की थी. इसके बाद दो बेटियों मिराया और राध्या का वेलकम किया था।

उत्कृष्ट प्रदर्शन पर मीटर रीडर व कार्यपालक सहायकों का हुआ भव्य सम्मान

बक्सर विद्युत आपूर्ति प्रमंडल में आयोजित समारोह में 31 कर्मियों को मिला सम्मान, अधिकारियों ने सराहा योगदान

बक्सर (संवाददाता)। विद्युत आपूर्ति प्रमंडल, बक्सर के प्रांगण में सोमवार को एक गरिमामय मिलन एवं सम्मान समारोह का आयोजन किया गया। यह कार्यक्रम वित्तीय वर्ष 2025-26 के दौरान उत्कृष्ट कार्य करने वाले अधिकारियों और कर्मचारियों को सम्मानित करने के उद्देश्य से आयोजित किया गया था। समारोह में प्रमंडल के विभिन्न अनुभागों से जुड़े कर्मियों की सक्रिय भागीदारी देखने को मिली, जिससे आयोजन का माहौल उत्साहपूर्ण और प्रेरणादायक बना रहा।

कार्यक्रम की अध्यक्षता विद्युत कार्यपालक अभियंता सूर्य प्रकाश सिंह ने की। अपने संबोधन में उन्होंने सभी कर्मचारियों के कार्यों की सराहना करते हुए कहा कि विभाग द्वारा निर्धारित लक्ष्यों की प्राप्ति में प्रत्येक कर्मचारी की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। उन्होंने विशेष रूप से मार्च 2026 के लक्ष्य को समय पर पूरा करने के लिए कर्मियों के समर्पण, मेहनत और टीम भावना की प्रशंसा की।

इस अवसर पर 18 मीटर रीडरों, 5 कार्यपालक सहायकों एवं 8 बिलिंग पर्यवेक्षकों को उनके उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए सम्मानित किया गया। सभी चयनित कर्मियों को गमछा भेंट कर सम्मानित किया गया, जो स्थानीय परंपरा के अनुसार सम्मान का प्रतीक माना जाता है। इसके अलावा कार्यक्रम में उपस्थित सभी फील्ड स्टाफ का भी कनीय विद्युत अभियंताओं द्वारा गर्मजोशी के साथ स्वागत किया गया। समारोह के दौरान अधिकारियों ने कहा कि इस प्रकार के आयोजन कर्मचारियों का मनोबल बढ़ाने के साथ-साथ उन्हें और बेहतर कार्य करने के लिए प्रेरित करते हैं। उन्होंने यह भी आशा व्यक्त की कि सम्मानित कर्मचारी भविष्य में भी अपनी जिम्मेदारियों का निर्वहन पूरी निष्ठा और ईमानदारी के साथ करते रहेंगे।

कार्यक्रम में विद्युत कार्यपालक अभियंता राम लखन राम, सहायक विद्युत अभियंता (शहरी) रवि राज, सहायक विद्युत अभियंता (ग्रामीण) अर्जुन वर्मा, सहायक विद्युत अभियंता कोरानसराय राकेश कुमार दुबे, सहायक विद्युत अभियंता डुमरांव राजीव कुमार तथा सहायक विद्युत अभियंता (परियोजना/राजस्व) रोहित कुमार सहित कई अन्य अधिकारी एवं कनीय अभियंता उपस्थित रहे।

सभी अधिकारियों ने मिलकर फील्ड स्टाफ और सम्मानित कर्मियों को गमछा देकर सम्मानित किया तथा उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की। समारोह का समापन आपसी संवाद, सहयोग और विभागीय एकता के संदेश के साथ हुआ, जिससे कर्मचारियों में नई ऊर्जा और उत्साह का संचार हुआ।

मासूम से दुष्कर्म की घटना पर उबाल, ऐपवा ने सरकार को घेरा

बक्सर (संवाददाता)। जिले के मुफस्सिल थाना क्षेत्र के एक गांव में पांच वर्षीय मासूम बच्ची के साथ हुई दुष्कर्म की दर्दनाक घटना ने पूरे इलाके को झकझोर कर रख दिया है। इस घटना के सामने आने के बाद जहां एक ओर परिजनों पर दुखों का पहाड़ टूट पड़ा है, वहीं दूसरी ओर पूरे गांव और आसपास के क्षेत्रों में आक्रोश और भय का माहौल व्याप्त हो गया है।

घटना के संबंध में मिली जानकारी के अनुसार, गांव के एक नवनिर्मित मकान से बच्ची के रोने और चीखने की आवाज सुनाई दी। आवाज सुनकर आसपास के लोग तुरंत मौके की ओर दौड़े। जब ग्रामीण वहां पहुंचे तो बच्ची की हालत देखकर उनके होश उड़ गए। बच्ची दर्द से कराह रही थी और उसकी स्थिति बेहद गंभीर थी। मौके पर मौजूद लोगों ने तत्काल परिजनों को सूचना दी और बिना देर किए बच्ची को इलाज के लिए सदर अस्पताल पहुंचाया। सदर अस्पताल में डॉक्टरों द्वारा की गई प्रारंभिक जांच में दुष्कर्म की पुष्टि होने के बाद मामला और भी गंभीर हो गया। डॉक्टरों ने बच्ची की हालत को देखते हुए बेहतर इलाज की आवश्यकता बताई। घटना की जानकारी मिलते ही पुलिस और प्रशासनिक महकमे में भी हलचल मच गई।

इस हृदयविदारक घटना के बाद पूरे इलाके में आक्रोश की लहर दौड़ गई है। ग्रामीणों का कहना है कि इस तरह की घटनाएं समाज की संवेदनशीलता और सुरक्षा व्यवस्था पर गंभीर सवाल खड़े करती हैं। कई लोगों ने आरोप लगाया कि क्षेत्र में कानून-व्यवस्था की स्थिति कमजोर होती जा रही है, जिसके कारण अपराधियों के हौसले बुलंद हैं। घटना के विरोध में स्थानीय लोगों ने प्रशासन से कड़ी कार्रवाई की मांग की है। ग्रामीणों ने चेतावनी दी है कि यदि दोषियों की जल्द गिरफ्तारी नहीं हुई तो वे आंदोलन करने को बाध्य होंगे। गांव में तनावपूर्ण शांति बनी हुई है और लोग लगातार इस घटना को लेकर चर्चा कर रहे हैं।

इस मामले को लेकर ऑल इंडिया प्रोग्रेसिव वूमेंस एसोसिएशन (ऐपवा) की बक्सर जिला इकाई ने भी तीखी प्रतिक्रिया व्यक्त की है। जिला अध्यक्ष रेखा देवी और जिला सचिव संध्या पाल द्वारा जारी संयुक्त बयान में बिहार सरकार पर निशाना साधते हुए कहा गया है कि राज्य में महिलाओं और बच्चियों के खिलाफ यौन हिंसा की घटनाएं लगातार बढ़ रही हैं। उन्होंने आरोप लगाया कि सरकार अपराध पर नियंत्रण पाने में पूरी तरह विफल साबित हो रही है।

ऐपवा नेताओं ने कहा कि जिले में इससे पहले भी कई गंभीर घटनाएं सामने आ चुकी हैं—जैसे किरनी की घटना और जहानाबाद की छात्रा का मामला—जो यह दर्शाते हैं कि अपराधियों के मन में कानून का कोई डर नहीं बचा है। उनका कहना है कि जब तक अपराधियों को त्वरित और कड़ी सजा नहीं दी जाएगी, तब तक ऐसी घटनाओं पर अंकुश लगाना मुश्किल है। संगठन ने यह भी आरोप लगाया कि पीड़िता के परिजनों को डराने और दबाव बनाने की कोशिश की जा रही है, जो अत्यंत चिंताजनक है। ऐपवा ने प्रशासन से मांग की है कि पीड़ित परिवार को तत्काल सुरक्षा प्रदान की जाए और उन्हें हर संभव कानूनी सहायता उपलब्ध कराई जाए।

इसके साथ ही संगठन ने पास्को एक्ट के तहत इस मामले में स्पीडी ट्रायल चलाने, मुख्य आरोपी की जल्द गिरफ्तारी सुनिश्चित करने और उसे कठोरतम सजा दिलाने की मांग की है। उन्होंने यह भी कहा कि इस तरह के मामलों में देरी न्याय के साथ अन्याय के समान है, इसलिए प्रशासन को तत्परता दिखानी चाहिए।

बक्सर के मुफस्सिल क्षेत्र में 5 वर्षीय बच्ची से दरिंदगी, ग्रामीणों में आक्रोश; दोषियों की जल्द गिरफ्तारी और कड़ी सजा की मांग

घटना के बाद पुलिस प्रशासन ने भी जांच तेज कर दी है। संदिग्धों से पूछताछ की जा रही है और आसपास के क्षेत्रों में छानबीन की जा रही है। हालांकि, समाचार लिखे जाने तक मुख्य आरोपी की गिरफ्तारी की पुष्टि नहीं हो सकी थी।

यह घटना न केवल बक्सर बल्कि पूरे प्रदेश के लिए एक गंभीर चेतावनी है। महिला और बाल सुरक्षा को लेकर एक बार फिर सवाल खड़े हो गए हैं। सामाजिक संगठनों और जागरूक नागरिकों ने सरकार से सख्त कानून व्यवस्था लागू करने, सुरक्षा तंत्र को मजबूत करने और ऐसे अपराधों पर तत्काल रोक लगाने की अपील की है। समाज के विभिन्न वर्गों का मानना है कि केवल कानून बनाना पर्याप्त नहीं है, बल्कि उनका सख्ती से पालन कराना भी उतना ही जरूरी है। इस घटना ने एक बार फिर यह सोचने पर मजबूर कर दिया है कि आखिर कब तक मासूम बच्चियां इस तरह की दरिंदगी का शिकार होती रहेंगी और कब उन्हें सुरक्षित वातावरण मिल पाएगा।

तेज रफ्तार कार की टक्कर से साइकिल सवार युवक गंभीर घायल, चालक फरार

बक्सर (संवाददाता)। मुफस्सिल थाना क्षेत्र के चौसा-बक्सर मार्ग पर रविवार की रात एक भीषण सड़क दुर्घटना में साइकिल सवार एक युवक गंभीर रूप से घायल हो गया। घटना के बाद इलाके में अफरा-तफरी का माहौल बन गया, वहीं परिजनों में कोहराम मच गया है। घायल युवक की पहचान चौसा नगर पंचायत के दुर्गा मंदिर निवासी 34 वर्षीय मो. एजाज के रूप में की गई है।

मिली जानकारी के अनुसार, मो. एजाज निजी स्तर पर रेलवे में कार्यरत है और प्रतिदिन की तरह रविवार की देर शाम भी वह अपनी ड्यूटी समाप्त कर भदौरा से साइकिल के जरिए अपने घर लौट रहा था। इसी दौरान यादव मोड़ और बारा मोड़ के बीच एक तेज रफ्तार कार ने उसे जोरदार टक्कर मार दी। प्रत्यक्षदर्शियों के अनुसार, कार की रफ्तार काफी अधिक थी और चालक ने नियंत्रण खो दिया, जिसके कारण यह हादसा हुआ।

टक्कर इतनी भीषण थी कि एजाज सड़क पर दूर जा गिरा और गंभीर रूप से घायल हो गया। उसके शरीर से काफी खून बह रहा था और वह दर्द से कराह रहा था। घटना के तुरंत बाद आसपास के लोग मौके पर पहुंचे और घायल की स्थिति देखकर स्तब्ध रह गए। स्थानीय लोगों ने मानवता का परिचय देते हुए बिना देर किए घायल युवक को चौसा सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र (सीएचसी) पहुंचाया। वहां मौजूद चिकित्सकों ने प्राथमिक उपचार किया, लेकिन स्थिति गंभीर देखते हुए उसे तत्काल बेहतर इलाज के लिए सदर अस्पताल रेफर कर दिया गया। डॉक्टरों के अनुसार, एजाज के पैर में गंभीर फ्रैक्चर हुआ है और उसे विशेषज्ञ चिकित्सा की आवश्यकता है।

इधर, घटना की सूचना मिलते ही परिजनों में हड़कंप मच गया। अस्पताल पहुंचते ही परिजनों का रो-रोकर बुरा हाल हो गया। परिवार के सदस्य लगातार उसकी हालत को लेकर चिंतित हैं और बेहतर इलाज की उम्मीद कर रहे हैं। स्थानीय ग्रामीणों ने इस हादसे के बाद प्रशासन पर भी सवाल उठाए हैं। उनका कहना है कि चौसा-बक्सर मार्ग पर तेज रफ्तार वाहनों का कहर लगातार बढ़ता जा रहा है, लेकिन इसे नियंत्रित करने के लिए कोई ठोस कदम नहीं उठाए जा रहे हैं। ग्रामीणों ने मांग की है कि इस मार्ग पर स्पीड कंट्रोल के लिए सख्त नियम लागू किए जाएं, नियमित गश्ती बढ़ाई जाए और आवश्यक स्थानों पर स्पीड ब्रेकर लगाए जाएं, ताकि भविष्य में इस तरह की घटनाओं को रोका जा सके।

मामले की जानकारी देते हुए अपर थानाध्यक्ष चंदन कुमार ने बताया कि दुर्घटना की सूचना मिलते ही पुलिस टीम मौके पर पहुंची और घायल को तुरंत इलाज के लिए भेजा गया। उन्होंने कहा कि टक्कर मारने के बाद कार चालक मौके से फरार हो गया है। पुलिस द्वारा उसकी पहचान और गिरफ्तारी के लिए छानबीन की जा रही है। पुलिस आसपास के सीसीटीवी फुटेज खंगाल रही है और प्रत्यक्षदर्शियों से पूछताछ कर रही है, ताकि आरोपी तक जल्द से जल्द पहुंचा जा सके। अधिकारियों का कहना है कि दोषी चालक को किसी भी हाल में बख्शा नहीं जाएगा और उसके खिलाफ सख्त कानूनी कार्रवाई की जाएगी।

ट्रक का गेट तोड़ चोरी, नकदी व बैट्री ले उड़े चोर

बक्सर (संवाददाता)। शहर के बाइपास रोड स्थित इंडियन ऑयल पेट्रोल पंप के पास खड़े एक ट्रक से उचक्कों ने चोरी की वारदात को अंजाम दिया। चोरों ने ट्रक का गेट तोड़कर करीब 20 हजार रुपये नकद और दो बैट्री चुरा ली। चुरामनपुर निवासी ट्रक चालक विकास कुमार नो एंट्री के कारण वाहन खड़ा कर गांव चले गए थे, जबकि खलासी ट्रक पर मौजूद था। रात में खलासी के खाना खाने जाने के दौरान चोरों ने घटना को अंजाम दिया। वापस लौटने पर गेट टूटा देख खलासी ने चालक को सूचना दी। इसके बाद टाउन थाना में अज्ञात चोरों के खिलाफ एफआईआर दर्ज कराई गई। पुलिस मामले की जांच में जुटी है। घटना के बाद आसपास के लोगों में दहशत का माहौल है। स्थानीय लोगों ने क्षेत्र में पुलिस गश्ती बढ़ाने की मांग की है।

सरकारी स्कूलों की बदहाली उजागर, निजी विद्यालयों की ओर रुख करने को मजबूर अभिभावक

बक्सर के राजकीय बुनियादी विद्यालय की स्थिति चिंताजनक

बक्सर (संवाददाता)। शिक्षा विभाग भले ही सरकारी विद्यालयों में शिक्षा व्यवस्था सुधारने के बड़े-बड़े दावे कर रहा हो, लेकिन जमीनी हकीकत इन दावों से बिल्कुल उलट नजर आ रही है। बक्सर जिले में शिक्षा व्यवस्था की वास्तविक स्थिति ने एक बार फिर पूरे तंत्र पर सवाल खड़े कर दिए हैं।

एक ओर जहां पूरे बिहार में निजी विद्यालयों की मनमानी फीस और अन्य व्यवस्थाओं को लेकर अभिभावकों में नाराजगी बढ़ रही है, वहीं दूसरी ओर सरकारी स्कूलों की बदहाल स्थिति उन्हें मजबूरन अपने बच्चों का नामांकन निजी विद्यालयों में कराने को विवश कर रही है। ऐसे में गरीब और मध्यम वर्गीय परिवार सबसे ज्यादा प्रभावित हो रहे हैं।

सोमवार को बक्सर शहर के स्टेशन रोड स्थित राजकीय बुनियादी विद्यालय की जो तस्वीर सामने आई, उसने सभी को चौंका दिया। लगभग 323 छात्रों वाले इस विद्यालय में पढ़ाई की व्यवस्था अत्यंत दयनीय स्थिति में है। पूरे स्कूल का संचालन महज दो कमरों में किया जा रहा है, वह भी दो अलग-अलग शिफ्टों में। सुबह और दोपहर की शिफ्ट में बच्चों को बांटकर पढ़ाई कराई जा रही है, लेकिन सीमित संसाधनों के कारण न तो बच्चों को पर्याप्त समय मिल पा रहा है और न ही गुणवत्तापूर्ण शिक्षा। एक ही कमरे में अलग-अलग कक्षाओं के बच्चों को बैठाकर पढ़ाना शिक्षकों के लिए भी बड़ी चुनौती बन गया है।

विद्यालय की इस स्थिति को देखकर सहज ही अंदाजा लगाया जा सकता है कि यहां पढ़ने वाले बच्चों का शैक्षणिक भविष्य कितना प्रभावित हो रहा होगा। अभिभावकों का कहना है कि जब बच्चों को उचित वातावरण और संसाधन ही नहीं मिलेंगे, तो वे प्रतिस्पर्धा में कैसे आगे बढ़ पाएंगे। सबसे हैरानी की बात यह है कि इसी विद्यालय परिसर में जिला शिक्षा पदाधिकारी (डीईओ) का कार्यालय भी स्थित है। इसके बावजूद विद्यालय की बदहाल स्थिति में कोई सुधार नहीं होना 'चिराग तले अंधेरा' कहावत को पूरी तरह चरितार्थ करता है।

स्थानीय लोगों का आरोप है कि कई बार इस समस्या को अधिकारियों के समक्ष उठाया गया, लेकिन अब तक कोई ठोस कार्रवाई नहीं की गई। न तो अतिरिक्त कक्षाओं का निर्माण हुआ और न ही शिक्षकों की संख्या में वृद्धि की गई। शिक्षा विशेषज्ञों का मानना है कि यदि प्राथमिक स्तर पर ही बच्चों को उचित शिक्षा नहीं मिलती है, तो इसका असर उनके पूरे भविष्य पर पड़ता है। ऐसे में सरकारी स्कूलों की स्थिति सुधारना बेहद आवश्यक है, ताकि सभी वर्गों के बच्चों को समान और गुणवत्तापूर्ण शिक्षा मिल सके।

अभिभावकों ने सरकार और शिक्षा विभाग से मांग की है कि विद्यालय में पर्याप्त कक्षाओं की व्यवस्था की जाए, शिक्षकों की संख्या बढ़ाई जाए और बुनियादी सुविधाओं को दुरुस्त किया जाए। साथ ही नियमित निरीक्षण की व्यवस्था सुनिश्चित की जाए, ताकि इस तरह की लापरवाही दोबारा सामने न आए। यह मामला केवल एक विद्यालय तक सीमित नहीं है, बल्कि पूरे जिले और राज्य की शिक्षा व्यवस्था की वास्तविकता को उजागर करता है।

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक मतिउर्रहमान द्वारा अजीमाबाद प्रिंटर्स, आर. सी. एफ./105, ग्राउण्ड फ्लोर, बी. एच. कॉलोनी, भूतनाथ रोड, कंकड़बाग, पटना- 800026 बिहार से मुद्रित एवं अमला टोली, मेन रोड़, बक्सर -802101, बिहार से प्रकाशित, संपादक- मतिउर्रहमान, E-mail:- qalamlok@gmail.com, Regn. No. BIHHIN/2017/72480